A Daily News Magazine
इंदौर
रविवार, 17 नवंबर, 2024

इंदौर एवं भोपाल से एक साथ प्रकाशित

वर्ष 10 अंक 50, नगर संस्करण, पृष्ठ 8, मूल्य रू. 2 (डाक पंजीयन संख्या: MP/IDC/1529/2016-2018)

सुबह सवेरे

subahsaverenews@gmailĐcom
facebookĐcom/subahsaverenews
wwwĐsubahsavereĐnews
twitterĐcom/subahsaverenews

कला नगरी का वैभव

गुजरात का वडोदरा गायकवाड़ा शासकों की कर्मस्थली रहा है। भारत का सांस्कृतिक नगर कहे जाने वाले वडोदरा सूरसागर तालाब पर्यटकों का मन मोहता है। यहां भगवान शिव की खड़ी प्रतिमा तथा पानी में रोशनी की छटां लुभावनी लगती है। चौपाटी के रूप में विकसित इस क्षेत्र में न्याय मंदिर और मांडवी नामक प्रसिद्ध बाजार है।

फोटो : ऋतुराज बुड़ावनवाला, खाचरौद

सुप्रभात

हमारे आस-पास
जी रहे हैं
हजारों बच्चे
एक आपराधिक भाव लिए
अपने चेहरों पर।

जब वे छोटे थे
हम उनके पथ प्रदर्शक थे।

पता नहीं, कब छूट गई हमारे
हाथ से उनकी अंगुली
खो गए वे भीड़ में कहीं।

सालों बाद वे मिले हमें
ढाबों पर कप-प्लेट धोते
फुटपाथ पर बूट पॉलिश करते रेल्वे
प्लेटफॉर्म पर पड़े फटेहाल
और सुधारगृह में सुधरने के लिए।

अपने चेहरे पर
आपराधिक भाव लिए वे,
जमीन में गड़े जा रहे थे
उनकी आँखों में सवाल
भी नहीं था कि,
वे यहां क्यों आ गए?

पर,
ये सवाल हम सबके बीच है
कि, वे यहां कैसे पहुंच गए?

- अनुपमा तिवाड़ी

नहीं हो पाई शिनाख्त पैरेंट्स का नंबर भी ऑफ

● झांसी अस्पताल अग्निकांड में अब होगी डीएनए जांच ● 10 नवजात बच्चे जिंदा जले, 8 बच्चों का पता ही नहीं ● मेडिकल कॉलेज दौरे से पहले साफ-सफाई, चूना डाला गया ● अस्पताल प्रशासन पर भड़के डिप्टी सीएम, बोले-ऐक्शन लेंगे

झांसी (एजेंसी)। झांसी के महारानी लक्ष्मीबाई सरकारी मेडिकल कॉलेज में स्पेशल न्यू बोर्न केयर यूनिट में शुक्रवार रात भीषण आग लग गई। हादसे में 10 बच्चों की मौत हो गई। वार्ड की खिड़की तोड़कर 39 बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला गया। अभी तक 8 बच्चों की सूचना नहीं मिल पाई है। शनिवार सुबह उनके परिजन मेडिकल कॉलेज पहुंच गए और हंगामा कर दिया। हादसा रात करीब साढ़े 10 बजे हुआ। ऑक्सीजन कंसंट्रेटर में स्पार्किंग के चलते आग लगी, फिर धमाका हो गया। पूरे वार्ड में आग फैल गई। वार्ड बॉय ने आग बुझाने के लिए अग्निशमन यंत्र (फायर एक्सटिंग्विशर) चलाया, मगर वह 4 साल पहले ही एक्सपायर हो चुका था, इसलिए काम नहीं किया। सूचना पर फायर ब्रिगेड की 6 गाड़ियां पहुंचीं। खिड़की तोड़कर पानी की बौछारें मारीं। भीषण आग को देखते हुए सेना को बुलाया गया। करीब 2 घंटे में आग पर काबू पाया गया। हादसे से जुड़े वीडियो सामने आए हैं। इसमें दिख रहा है कि एक तरफ हॉस्पिटल में चीख-पुकार मची हुई थी। दूसरी तरफ, डिप्टी सीएम ब्रजेश पाठक के पहुंचने से पहले सड़क की सफाई और चूना डाला जा रहा है। हालांकि जिन बच्चों की मौत हो गई, उनमें से कुछ अभी भी ऐसे हैं जिनकी शिनाख्त नहीं हो पाई है। गार्जियन का मोबाइल नंबर भी स्विच ऑफ बता रहा है। अब डीएनए जांच कराए जाने की बात कही जा रही।

कांकेर में नक्सलियों का एनकाउंटर

5 नक्सली किए गए ढेर, शव बरामद, मुठभेड़ जारी

रायपुर (एजेंसी)। नारायणपुर के अबूझमाड़ क्षेत्र में मओवादियों की उपस्थिति की सूचना मिलने के बाद सर्चिंग में निकली संयुक्त जवानों की टीम के द्वारा जवानों और नक्सलियों के बीच जमकर मुठभेड़ हुई है। इस मुठभेड़ में 5 नक्सलियों के मारे जाने की खबर आ रही है। वहीं दो जवान घायल हुए हैं। इस मुठभेड़ में डीआरजी के दो जवान भी घायल बताए जा रहे हैं। एक जवान खिलेश्वर गावड़े के सिर और दाहिने हाथ पर गोली लगी है, वहीं दूसरे का नाम हीरामन यादव बताया जा रहा है जिनके दाएं पैर के जांघ में गोली लगी है। यह मुठभेड़ कांकेर और नारायणपुर जिले की सीमा पर स्थित माड़ इलाके में हुई। सुरक्षाबलों को नक्सलियों की मौजूदगी की सूचना मिली थी, जिसके बाद सर्च ऑपरेशन शुरू किया गया। इसी दौरान नक्सलियों ने सुरक्षाबलों पर हमला कर दिया, जिसके बाद दोनों ओर से गोलीबारी शुरू हो गई। मारे गए नक्सलियों के पास से भारी मात्रा में हथियार भी बरामद किए गए हैं। आईजी बस्तर पी सुंदरराज ने बताया कि दोनों घायल जवानों के लिए बेहतर इलाज की व्यवस्था की जा रही है। सुरक्षाबल और नक्सलियों के बीच गोलीबारी अभी भी जारी है। नारायणपुर कांकेर में नक्सली मुठभेड़ के दौरान दो घायल जवानों को इलाज के लिए एयरलिफ्ट किया गया।

कनाडा के बाद अब यूके में शुरू हुआ भारत विरोधी काम

ओट्टावा (एजेंसी)। कनाडा के बाद अब एक और पश्चिमी देश ब्रिटेन में भी भारतीयों को रोकने की प्रक्रिया शुरू हो गई है। इंग्लैंड में उच्च शिक्षा क्षेत्र की स्थिरता पर एक नयी रिपोर्ट से पता चला है कि भारतीय छात्रों को ब्रिटेन के विश्वविद्यालयों में आवेदन करने से रोका जा रहा है। ऐसे समय में जब शिक्षा संस्थान पहले ही सीमित बजट का सामना कर रहे हैं, इसने विश्वविद्यालयों के वित्तीय संकट को बढ़ा दिया है। शुक्रवार को जारी 'ऑफिस फॉर स्टूडेंट्स' विश्लेषण से पता चलता है कि भारतीय छात्रों की संख्या में 20.4 प्रतिशत की गिरावट आई है।

मणिपुर में 2 बच्चों समेत तीन लोगों के शव मिले

लापता मैतेई परिवार के होने की संभावना, होगा बवाल

इंफाल (एजेंसी)। मणिपुर में एक महिला और दो बच्चों के शव शुक्रवार को जिरी नदी में बहते मिले। इन्हें पोस्टमॉर्टम के लिए भेजा गया है। ये शव सोमवार को मुठभेड़ के बाद से लापता हुए लोगों के हो सकते हैं। सोमवार को वर्दी पहने हथियारबंद उग्रवादियों ने बोरोब्रेका थाना परिसर और सीआरपीएफ कैंप पर हमला किया था। इसमें 10 उग्रवादी मारे गए थे। इस दौरान जिरीबाम जिले के बोरोब्रेका थाना परिसर स्थित राहत शिविर से 6 लोग लापता हो गए थे। स्थानीय लोगों ने आशंका जताई थी कि हमला करने वाले उग्रवादियों ने महिलाओं और बच्चों का अपहरण किया है। इनकी तलाश की मांग को लेकर विरोध-प्रदर्शन हो रहे हैं।

दो दिवसीय दौरे पर नाइजीरिया रवाना हुए प्रधानमंत्री मोदी

● 17 साल बाद किसी भारतीय प्रधानमंत्री का यह दौरा, करेंगे बड़ी चर्चा

अबुजा (एजेंसी)। प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी शनिवार लगभग डेढ़ बजे नाइजीरिया दौरे के लिए रवाना हो गए हैं। वे राष्ट्रपति अहमद टिनूबू के न्योते पर पहली बार नाइजीरिया जा रहे हैं। यह किसी भारतीय प्रधानमंत्री का 17 साल में पहला नाइजीरिया दौरा होगा। मोदी से पहले साल 2007 में तत्कालीन पीएम डॉ. मनमोहन सिंह नाइजीरिया के दौरे पर गए थे। पीएम मोदी रविवार को राष्ट्रपति टिनूबू से मुलाकात करेंगे। उनके बीच भारत-नाइजीरिया के द्विपक्षीय संबंधों को और मजबूत करने पर चर्चा होगी। इसके बाद मोदी राजधानी अबुजा में भारतीय समुदाय के लोगों को भी संबोधित करेंगे। नाइजीरिया में 150 से ज्यादा भारतीय कंपनियां हैं, जिनका करोड़ से ज्यादा का कारोबार है।

बहुत जल्द इंग्लैंड और जापान को पीछे छोड़ेगा भारत

सीएम मोहन यादव बोले-अर्थव्यवस्था का 'रॉकेट' की रफ्तार से होगा विकास

भोपाल। मध्य प्रदेश की राजधानी में आयोजित एक कार्यक्रम में मुख्यमंत्री मोहन यादव ने भारत की प्रगति की सराहना की और कहा कि जल्द ही भारत की अर्थव्यवस्था इंग्लैंड और जापान से भी आगे निकल जाएगी। उन्होंने कहा कि प्रधानमंत्री मोदी के नेतृत्व में भारत ने अभूतपूर्व विकास किया है। सीएम मोहन यादव ने बताया कि 2014 में जब प्रधानमंत्री मोदी ने कार्यभार संभाला था तब भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में 11वें स्थान पर थी। 2024 में हम 5वें स्थान पर पहुंच चुके हैं। यह प्रगति इतनी तेज है कि अब हम जल्द ही जापान को भी पीछे छोड़ देंगे। यह किसी से छुपा नहीं है। उन्होंने आगे कहा कि पहले यह अनुमान था कि 2026 तक हम जापान को पीछे छोड़ पाएंगे, लेकिन 2024 में अर्थव्यवस्था की तेज गति को देखते हुए यह साफ़ है कि हम यह लक्ष्य समय से पहले ही हासिल कर लेंगे। मुख्यमंत्री ने भारत के आत्मनिर्भर बनने की दिशा में किए गए प्रयासों की सराहना की। उन्होंने कहा कि अब भारत ने पश्चिमी देशों का रास्ता छोड़ दिया है। सीएम मोहन ने कहा कि हमने उस रास्ते पर चलने का फैसला किया था जिसे इंग्लैंड और दूसरे पश्चिमी देशों ने अपनाया था। लेकिन भारत ने अपनी बुद्धि, खुद पर निर्भरता और विकास से पूरी दुनिया को एक नया सन्देश दिया है। सीएम ने डिजिटल पेमेंट को भारत की एक और बड़ी उपलब्धि बताया। उन्होंने डिजिटल पेमेंट को लेकर गर्व जताया है। साथ ही डिजिटल पेमेंट सिस्टम से भारत ने इस क्षेत्र में एक नई क्रांति ला दी है।

भोपाल का तापमान

अधिकतम 30 °c

न्यूनतम 20°c

सुबह सवेरे

इंदौर ■ रविवार, 17 नवंबर 2024

जो अग्नि हमें गर्मी देती है , हमें नष्ट भी कर सकती है ; यह अग्नि का दोष नहीं है।

चाणक्य नीति

संक्षिप्त समाचार

अकाली दल के प्रधान सुखबीर बादल ने दिया इस्तीफा

चंडीगढ़ (एजेंसी)। शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने अपने पद से इस्तीफा दे दिया। इसकी जानकारी पार्टी के प्रवक्ता डॉ. दलजीत सिंह चीमा ने दी। उन्होंने इसको लेकर सोशल मीडिया पर पोस्ट डाली।

उन्होंने पोस्ट में लिखा- शिरोमणि अकाली दल के अध्यक्ष सुखबीर सिंह बादल ने आज पार्टी की कार्यसमिति को अपना इस्तीफा सौंप दिया, ताकि नए अध्यक्ष के चुनाव का रास्ता साफ हो सके। उन्होंने उन्होंने अपने नेतृत्व के दौरान समर्थन और सहयोग के लिए पार्टी के नेताओं और कार्यकर्ताओं का आभार व्यक्त किया। करीब 3 महीने पहले सुखबीर बादल को धार्मिक सजा सुनाई गई थी।

पाकिस्तान में सेना के कैंप पर हमला, 7 जवानों की मौत

इस्लामाबाद (एजेंसी)। पाकिस्तान के बलूचिस्तान में एक बार फिर अलगाववादियों ने सेना के कैंप पर हमला बोला है। बलूचिस्तान के कलात में एक सैन्य शिविर पर शुक्रवार रात को हुए हमले में कम से कम 7 पाकिस्तानी जवानों की मौत हुई है और 15 अन्य घायल हो गए। बलूच लिबरेशन आर्मी ने मीडिया को भेजे एक

एक बयान में हमले की जिम्मेदारी ली है। न्यूज आउटलेट खुरासान डायरी ने इस हमले के बारे में जानकारी दी है। एक सप्ताह के भीतर यह बलूच विद्रोहियों का दूसरा बड़ा हमला है। मीडिया रिपोर्टों के अनुसार, कलात में हुए हमले में फ्रंटियर कॉर्प्स के सात जवानों की मौत हो गई और पंद्रह अन्य घायल हो गए।

'एक हैं तो सेफ हैं' नारे का हिंदू से कोई लेना देना नहीं

नई दिल्ली (एजेंसी)। महाराष्ट्र चुनाव में इस बार बीजेपी की तरफ से हिंदुत्व कार्ड पर काफी खेला जा रहा है। सीएम योगी आदित्यनाथ से लेकर पीएम मोदी तक ने हिंदू वोटरों को

एकमुश्त करने के लिए रणनीति बना रखी है। लेकिन अब महाराष्ट्र के मुख्यमंत्री एकनाथ शिंदे ने 'एक हैं तो सेफ हैं' नारे का असल मतलब बता दिया है। बड़ी बात यह है कि उनकी परिभाषा में कहीं भी हिंदू धर्म का जिक्र तक नहीं है। खास बातचीत करते हुए सीएम शिंदे ने दो टूक कहा कि हम लोग यह चुनाव विकास के मुद्दे पर ही लड़ रहे हैं। लेकिन जब पीएम मोदी बोलते हैं कि हम सभी को एकजुट रहना चाहिए, वे किसी भी धर्म का जिक्र नहीं कर रहे हैं, किसी विशेष जाति की बात नहीं कर रहे।

वंदे भारत स्लीपर का होगा शानदार आगाज

नई दिल्ली (एजेंसी)। देश की सबसे लोकप्रिय ट्रेन वंदे भारत को लेकर यात्रियों के साथ-साथ रेलवे भी काफी उत्साहित है। वंदे भारत की सफलता के बाद अब जल्द ही वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों की शुरुआत की जाएगी। भारतीय रेलवे यात्रियों के लिए एक बड़ी खुशखबरी लेकर आया है। लंबे इंतजार के बाद, वंदे भारत स्लीपर ट्रेनों को 2025-26 तक लॉन्च करने की तैयारी पूरी कर ली गई है। यह ट्रेनें लंबी दूरी के सफर को आरामदायक, विश्वस्तरीय सुविधाओं और आधुनिक डिजाइन के साथ पेश की जाएंगी। एक रिपोर्ट के अनुसार, भारतीय रेलवे 2025-26 तक 10 नई वंदे भारत स्लीपर ट्रेनें शुरू करने की योजना बना रहा है।

चलने वाली हैं 10 ट्रेनें! रेलवे का बड़ा प्लान

भारत की पहली वंदे भारत स्लीपर ट्रेन के 2025 में परीक्षण और ट्रायल रन के बाद शुरू होने की संभावना है। चेन्नई स्थित इंटीग्रल कोच फैक्ट्री (आईसीएफ) के महाप्रबंधक, यू. सुब्बा राव ने इसकी पुष्टि की है। उन्होंने बताया कि 15 नवंबर से दो महीने के लिए इन ट्रेनों का ऑसिलेशन

ट्रायल और अन्य परीक्षण किया जाएगा, जिसके बाद इन्हें व्यावसायिक सेवा में लाया जाएगा। वंदे भारत स्लीपर ट्रेनें यात्रियों की सुरक्षा और सुविधा को प्राथमिकता देने के लिए डिजाइन की गई हैं। इन ट्रेनों को हाई पावर वाले ऑस्टेनिटिक स्टेनलेस स्टील से बनाया गया है। इनमें क्रैश बफर और विशेष रूप से डिजाइन किए गए कपलर्स जैसे उन्नत सुरक्षा उपकरण लगाए गए हैं, जो आपात स्थिति में यात्रियों को सुरक्षित रखने में सक्षम हैं। इन ट्रेनों में कुल 16 कोच होंगे और ये 823 यात्रियों को ले जाने की क्षमता रखेंगी।

आईआईएम इंदौर प्लान करेगा महाकाल मंदिर का क्राउड मैनेजमेंट

कुंभ के लिए 5 ई मॉडल पर रोडमैप बनाएगी टीम,ट्रैफिक से होगी शुरुआत

भोपाल। महाकाल लोक बनने के बाद रोजाना डेढ़ से दो लाख श्रद्धालु दर्शन के लिए पहुंच रहे हैं। इससे कई बार शहर की ट्रैफिक व्यवस्था भी गड़बड़ाई है। ऐसे में 2028 में सिंहस्थ महापर्व को देखते हुए मंदिर आने वाले श्रद्धालुओं की दर्शन व्यवस्था को सुलभ बनाने के लिए काम शुरू हो गया है। जिसके तहत उज्जैन प्रशासन सहित महाकाल मंदिर समिति को आईआईएम इंदौर प्लान तैयार करके देगा। जिसमें भक्तों को सुलभ दर्शन, पार्किंग, ट्रैफिक सिस्टम के साथ पर्व के दिनों में क्राउड और ट्रैफिक मैनेजमेंट शामिल होंगे। शुक्रवार को इंडियन इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट (आईआईएम) इंदौर के डायरेक्टर हिमांशु राय के साथ प्रोफेसर हंस मिश्रा, प्रोफेसर सौरभ चंद्र, प्रोफेसर अमित वत्स की टीम महाकाल मंदिर पहुंची। यहां महाकाल मंदिर तिनेत्र कंट्रोल रूम में कलेक्टर नीरज सिंह, एसपी प्रदीप शर्मा, मंदिर प्रशासक गणेश धाकड़ सहित विकास प्राधिकरण के अधिकारियों के साथ बैठक की। आईआईएम टीम ने महाकाल मंदिर क्षेत्र में उन क्षेत्रों को देखा जहां पर श्रद्धालुओं की एंट्री एग्जिट होती है। साथ ही श्रद्धालुओं को मिलने वाली सुविधाएं महाकाल लोक सहित सभी प्रवेश द्वार से आने वाले भक्तों को लगने वाला समय, गणेश मंडपम तक पहुंचने के बाद एग्जिट करने में लगने वाले समय की मॉनिटरिंग भी की। अब आईआईएम इंदौर की टीम पूरे महाकाल मंदिर का प्लान तैयार करेंगी। जिसके तहत महाकाल मंदिर का क्राउड मैनेजमेंट से लेकर शहर का ट्रैफिक मैनेजमेंट में सुधार करने का प्लान बनाकर उज्जैन कलेक्टर को सौंपेंगे। अगले 3 से 4 महीने में पूरा रोडमैप बनेगा। इसके बाद महाकाल मंदिर सहित शहर में इसे लागू करेंगे। महाकाल लोक बनने के बाद रोजाना डेढ़ से दो लाख श्रद्धालु महाकाल मंदिर पहुंच रहे हैं। पर्व के दिनों ये संख्या 8 लाख श्रद्धालु प्रतिदिन तक भी पहुंची है। ऐसे में कई बार मंदिर में क्राउड मैनेजमेंट की व्यवस्था बिगड़ी है। श्रद्धालुओं की भीड़ के कारण महाकाल मंदिर के आसपास के क्षेत्र में ट्रैफिक व्यवस्था भी बिगड़ी है। महाकाल मंदिर के पास हरी फाटक ब्रिज से लेकर बेगमबाग, महाकाल घाटी, महाकाल चौराहा, गुदरी चौराहा, पटनी बाजार, गोपाल मंदिर तक जाम लगा रहता है।

पहले ट्रैफिक, फिर मंदिर के क्राउड को समझेंगे

इंदौर के डायरेक्टर हिमांशु राय ने कहा कि पूरा क्षेत्र घूमने के बाद यह समझ में आया कि जब तक हम लोग शहर के ट्रैफिक को मैनेज नहीं कर पाएंगे, तब तक यहां का भी मैनेजमेंट करना थोड़ा सा कठिन है। हम लोग शहर के ट्रैफिक को भी देखेंगे। पीक लोड जो अभी हमारे को समझ में आया है वह है लगभग दस लाख एक दिन में और सिंहस्थ कुंभ के लिए अलग देखना पड़ेगा। हो सकता है उसका ज्यादा लोड हो। उसके साथ जितनी भी बाकी सुविधाएं देनी पड़ती है जैसे शौचालय का ध्यान देना पड़ेगा वो और पार्किंग की व्यवस्था सबसे बड़ी चीज है कि जो लोग बाहर गाड़ियों से आ रहे हैं उनकी पार्किंग की व्यवस्था को भी ध्यान में रखना पड़ेगा। सुनने में बहुत साधारण लगता है, लेकिन जूते और मोबाइल फोन वापस लेने के लिए श्रद्धालु वापस उसी जगह आते हैं। इसका मतलब एक ही रोड पर ट्रैफिक दो बार हो रहा है। हम ऐसे सॉल्यूशन के बारे में सोच रहे हैं कि लोगों का सामान मूव होकर एग्जिट गेट पर चला जाए। जहां से वह ले सके ताकि यह डबल ट्रैफिक ना हो। इससे सारे रूट पर भीड़ भी जमा नहीं होगी और श्रद्धालु परेशान भी नहीं होंगे।

एक हैं तो सेफ हैं का नारा जन-जन तक पहुंचाना है

- **महाराष्ट्र के भाजपा कार्यकर्ताओं से बोले पीएम मोदी**
- **पीएम ने कहा- महाविकास अघाड़ी झूठ फैला रहा है**

मुंबई (एजेंसी)। महाराष्ट्र के विधानसभा चुनाव की वोटिंग से 4 दिन पहले प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने भाजपा कार्यकर्ताओं से कहा- एक हैं तो सेफ हैं जन-जन तक पहुंचाना है। महाविकास अघाड़ी महाराष्ट्र में झूठ फैला रही है। भाजपा के %मेरा बूथ सबसे मजबूत% कार्यक्रम में मोदी वर्चुअल माध्यम से हिस्सा लिया। उन्होंने भाजपा के बूथ कार्यकर्ताओं से कहा- महाराष्ट्र में भाजपा शासित महायुति मराठाओं के गौरव को बढ़ाने का काम कर रही है। महाराष्ट्र विधानसभा चुनाव के लिए सभी 288 विधानसभा सीटों पर सिंगल फेज में 20 नवंबर को वोटिंग है। इसके नतीजे 23 नवंबर को आएंगे। भाजपा महायुति गंठबंधन में सबसे ज्यादा सीटों पर चुनाव लड़ रही है। पार्टी ने 148 उम्मीदवार घोषित किए हैं। महाराष्ट्र के लोग महायुति सरकार के ढाई वर्ष के कार्यकाल से बहुत

प्रभावित हैं। मैं जहां-जहां गया हूं, मैंने ये प्यार देखा है। वो भी चाहते हैं कि अगले पांच साल यही सरकार रहनी चाहिए। महाराष्ट्र में गूंज रहा है- भाजप-महायुती आहे, तर गती आहे, महाराष्ट्राची प्रगती आहे। महायुति सरकार, समाज के हर वर्ग के सशक्तिकरण का प्रयास कर रही है।

यही फर्क है, हमारी और अघाड़ी वालों की सरकार में और इस फर्क को लोग महसूस कर रहे हैं।

राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर भोपाल प्रेस क्लब द्वारा परिचर्चा आयोजित

भोपाल। देश में प्रेस के सामने चुनौतियों का पहाड़ अवश्य है, लेकिन इसे फतह भी करना होगा। आज प्रेस की विश्वसनीयता भी खतरे में है और इसकी बाकायदा साजिश की जा रही है। विश्वसनीयता के लिए भी कहीं न कहीं हम जिम्मेदार हैं। क्योंकि जो प्रेस समाज और राजनीति का दिशा दर्शन करता था, आज इस भूमिका में नहीं दिखता।

आज राजधानी में न्यू मार्केट स्थित इंडियन कॉफी हाउस में राष्ट्रीय प्रेस दिवस पर आयोजित परिचर्चा प्रेस के खतरों और चुनौतियों पर केंद्रित रही।परिचर्चा की अध्यक्षता करते हुए वरिष्ठ पत्रकार संजीव आचार्य ने कहा कि प्रेस को बदनाम करने की साजिश सबसे बड़ी चुनौती है। इसके लिए मीडिया के लोग भी जिम्मेदार हैं। हमें मिलकर इसका विरोध करना होगा। वरिष्ठ पत्रकार अजय बोकिल का कहना था कि आज मीडिया के लिए केवल सोशल मीडिया ही नहीं एआई भी बड़ी चुनौती है। मूल लेखन खोता जा रहा है। पढ़ने की आदत खत्म होती जा रही है, ये अखबार के लिए ज्यादा घातक है। अखबार पढ़ने वाली ये अंतिम पीढ़ी कह सकते हैं। वरिष्ठ पत्रकार अलीम बज्मी का कहना था कि एआई पर ज्यादा निर्भरता उचित नहीं। ये रिपोर्टिंग में मदद नहीं कर सकती। हमें अपनी स्किल खुद विकसित करके प्रेस की रक्षा करनी होगी।

वरिष्ठ पत्रकार सतीश सक्सेना ने पत्रकारों की सुरक्षा का मुद्दा उठाया। प्रेस और पत्रकारों पर लगातार हमले हो रहे हैं। पहले प्रेस सुरक्षा अधिकारी हुआ करता था, अब ऐसी व्यवस्था नहीं है। और भी कई मुद्दे हैं, जो हम उठाते आए हैं और फिर सरकार से चर्चा करेंगे। प्रेस क्लब के अध्यक्ष संजय सक्सेना ने सभी आभार व्यक्त करते हुए कहा कि हम तमाम मुद्दों को लेकर संघर्ष कर रहे हैं। इसके लिए मीडिया संगठन यदि एकजुट नहीं हुए तो संकट और गहराना तय है।बाज जो खुद को सुरक्षित मान रहे हैं, नंबर उनका भी आएगा।

परिचर्चा में वरिष्ठ पत्रकार अरुण पटेल, नासिर हुसैन, ओपी श्रीवास्तव, विजय शर्मा, ए यू खान, प्रकाश सक्सेना, हाकम सिंह गुर्जर, मो परवेज, अलंकृत दुबे, दीनानाथ पटेल, ज्योति प्रकाश खरे प्रमुख रूप से उपस्थित रहे।

धारावी की जमीन अडाणी को देने चुराई महाराष्ट्र की सरकार

मुंबई (एजेंसी)। कांग्रेस नेता और लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी ने शनिवार को कहा- नरेंद्र मोदी और आरएसएस के लोग बंद कमरों में संविधान की हत्या करते हैं। जब महाराष्ट्र की सरकार को चोरी करने की मीटिंग में अडाणी, अमित शाह और आरएसएस के लोग बैठे थे, तब क्या वो संविधान की रक्षा कर रहे थे। आज पूरा महाराष्ट्र जानता है कि वो सरकार धारावी के कारण चोरी की गई, क्योंकि संघ-नरेंद्र मोदी धारावी की जमीन अपने मित्र अडाणी को देना चाहते थे। दरअसल, महाराष्ट्र के डिप्टी सीएम अजित पवार ने हाल ही में एक इंटरव्यू में कहा कि 2019 में भाजपा-एनसीपी के बीच सरकार बनाने के लिए जो डील हुई थी उसके लिए कई बैठकें हुईं। इन बैठकों में उद्योगपति गौतम अडाणी भी शामिल थे। महाराष्ट्र में 288 विधानसभा सीटों के लिए 20 नवंबर को वोटिंग

होनी है। कांग्रेस महाविकास अघाड़ी गठबंधन में सबसे ज्यादा 103 सीटों पर चुनाव लड़ रही है। राहुल बोले- भाजपा-संघ समझती है संविधान की किताब खोखली है। संविधान की किताब देश की पहचान है। इसमें शिवाजी महाराज, महात्मा गांधी और अंबेडकर की सोच है, लेकिन भाजपा और संघ के लोग यह बात नहीं समझते हैं। उनके लिए यह खोखली किताब है। महाराष्ट्र में विधानसभा चुनाव की वोटिंग से 4 दिन पहले प्रचार के लिए अमरावती पहुंचे राहुल गांधी ने कहा- संविधान की किताब हमारे लिए सिर्फएक किताब नहीं है। इस किताब में जो लिखा है, उसके लिए हजारों साल से हिंदुस्तान में लोग लड़ रहे हैं और मर रहे हैं। दरअसल, चुनाव प्रचार के दौरान भाजपा नेताओं ने राहुल गांधी द्वारा दिखाई जाने वाली लाल किताब को शहरी नक्सलवाद से जोड़ने की कोशिश की थी।

विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य लेकिन वह भारत-केंद्रित हो

संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा विकास और पर्यावरण की रक्षा के बीच संतुलन बनाना आवश्यक

नई दिल्ली (एजेंसी)। राष्ट्रीय स्वयंसेवक संघ प्रमुख मोहन भागवत शुक्रवार को गुरुग्राम पहुंचे थे। यहां वह विविभा-2024 विकसित भारत के लिए विजन के उद्घाटन सत्र में शामिल हुए। भागवत ने कहा कि विकास के लिए शिक्षा अनिवार्य लेकिन वह भारत-केंद्रित होनी चाहिए। उन्होंने कहा कि भारत को अपने विकास के मॉडल बनाने की जरूरत है जो वैश्विक उदाहरण बन सकें। संघ प्रमुख मोहन भागवत ने कहा कि शिक्षा के बिना

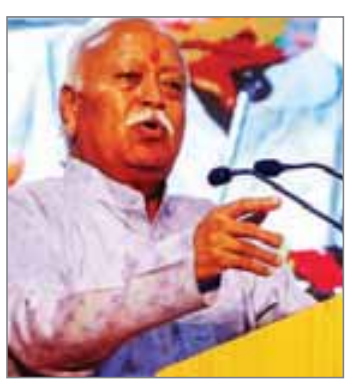

विकास संभव नहीं है,लेकिन यह शिक्षा भारत-केंद्रित होनी चाहिए। हमें दुनिया भर से अच्छे विचार लेने चाहिए, लेकिन कभी भी अंधाधुंध अनुयायी नहीं बनना चाहिए। भारतीय ज्ञान प्रणाली पर आधारित शोध के लिए शोधकर्ताओं का मार्गदर्शन करना शिक्षकों की जिम्मेदारी है। भारतीय शिक्षण मंडल- युवा आयाम की ओर से आयोजित इस कार्यक्रम में इसरो के अध्यक्ष एस सोमनाथ और नोबेल पुरस्कार विजेता कैलाश सत्यार्थी शामिल होंगे।

- **16वीं शताब्दी तक भारत हर क्षेत्र में आगे था-** मोहन भागवत ने कहा कि पहली शताब्दी से लेकर 16वीं शताब्दी तक भारत हर क्षेत्र में आगे था। हमने बहुत पहले ही बहुत कुछ खोज लिया था। हम बस रुक गए और इसी कारण हमारा पतन शुरू हुआ। उन्होंने खेती का उदाहरण देते हुए कहा कि भारत में पिछले 10,000 सालों से खेती हो रही है, लेकिन जमीन,पानी,हवा के प्रदूषित होने की समस्या कभी नहीं थी लेकिन जब बाहर से खेती आई, तो 500-600 सालों में ही ये चीजें होने लगीं। भागवत ने कहा, कहीं न कहीं भारत की दृष्टि में कमी थी, जिसके कारण विकास भी एकतरफा हुआ। भारत में विकास समग्र रूप से होना चाहिए। उन्होंने कहा कि आजकल बहस इस बात पर होती है कि विकास किया जाए या पर्यावरण की रक्षा,जैसे हमें एक को चुनना है।

अमेरिका में लाखों लोगों को सरकारी नौकरी से निकालेंगे विवेक रामास्वामी

बोले-मस्क का तरीका अपनाएंगे, देश को बचाने के लिए यह जरूरी

वॉशिंगटन (एजेंसी)। अमेरिका में भारतवंशी बिजनेसमैन विवेक रामास्वामी ने सरकारी नौकरियों में बड़े पैमाने पर कटौती का संकेत दिया है। एजेंसी के मुताबिक रामास्वामी ने फ्लोरिडा में गुरुवार को एक कार्यक्रम में कहा कि वे मस्क के साथ मिलकर लाखों सरकारी कर्मचारियों को सामूहिक रूप से निकाल देंगे। वे इसी तरह से देश को बचाने जा रहे हैं। रामास्वामी ने कहा- अगर आप

मस्क के काम करने के तरीके को जानते हैं तो आपको पता होगा कि वे 'छेनी' की तरह नहीं, बल्कि 'आरी' के जैसे काम करते हैं। हम ब्यूरोक्रेसी में उनका ये तरीका अपनाने जा रहे हैं। यह देखना काफी मजेदार होगा। अमेरिका में नवनिर्वाचित राष्ट्रपति डोनाल्ड ट्रम्प ने हाल ही में रामास्वामी और टेस्ला चीफ इलॉन मस्क को महत्वपूर्ण जिम्मेदारी दी है।

दुष्कर्म का वीडियो बनाकर बिलाल बनाता था संबंध

इंदौर की युवती के नाम पर पर्सनल लोन भी लिया

इंदौर। विजय नगर थाना क्षेत्र में शुक्रवार को लव जिहाद का मामला सामने आया। इंदौर की युवती ने भोपाल निवासी आरोपी बिलाल आजम पर दुष्कर्म का आरोप लगाया है। युवती का कहना है कि दुष्कर्म का वीडियो बनाकर आरोपी बिलाल धमकाता था और संबंध बनाता था। मामले की जानकारी लगते ही हिंदू जागरण मंच के कार्यकर्ताओं ने शुक्रवार रात विजय नगर थाने का घेराव किया। कार्यकर्ताओं ने युवती के बयान दोबारा लेने और आरोपित पर प्रकरण दर्ज करने की मांग की। साथ ही थाने पर करीब एक घंटे धरना दिया। उसके बाद पुलिस ने देर रात को एफआईआर दर्ज की।

हंगामे के बाद पुलिस ने दर्ज की शिकायत

इधर रात साढ़े दस बजे हिंदू जागरण मंच के कार्यकर्ता भी विजय नगर थाने पहुंचे और आरोपी के खिलाफ प्रकरण दर्ज करने की मांग करने लगे। पहले पुलिस ने मामले की छानबीन करने की बात कही, मगर कार्यकर्ता नहीं माने। बाद में पुलिस ने प्रकरण दर्ज कर लिया।

इंदौर में फिर लव जिहाद

विजय नगर क्षेत्र निवासी पीड़िता ने शुक्रवार को थाने में दिए आवेदन में कहा कि वह वर्ष 2022 में कॉल सेंटर में काम करती थी और स्कीम 54 स्थित एक मकान में किराए से रहती थी। भोपाल निवासी बिलाल से दोस्ती हो गई। बिलाल मेरे घर में आया और मुझे पसंद करने और शादी की बात करने लगा। तब मैंने सीधे मना कर दिया। इससे वह गुस्से होकर चला गया। 15 जून 2022 को पुनः आया। तब मना करने के बावजूद बिलाल ने चाकू दिखाकर धमकाया और संबंध बनाए। इसका वीडियो बनाया और फोटो खींचे। इसके बाद इन्हें प्रसारित करने की धमकी देता था और संबंध बनाता था। परेशान होकर लड़की ने इंदौर छोड़ दिया। बाद में बेंगलुरु जाकर नौकरी करने लगी। 2023 में कंपनी ने ट्रांसफर इंदौर कर दिया। फिर निरंजनपुर क्षेत्र में रहने लगी। आरोपित एक दिन घर आ गया और मुझे संबंध बनाने के लिए धमकाता रहा। इन्कार करने के बाद उसने कहा कि तेरे वीडियो-फोटो आज भी मेरे पास हैं। 22 अक्टूबर 2024 को उसने मेरे नाम से पर्सनल लोन लिया और समय-समय पर यूपीआई से अपने खाते में पैसे ट्रांसफर करवाता रहा। दो नवंबर को मेरा फोन गुम गया था। तीन नवंबर को फोन चोरी की शिकायत लसूड़िया थाने में करवाई। इसके बाद 15 नवंबर को मेरा फोन बिलाल की गाड़ी में मिला।

ठंड ने दी इंदौर में दस्तक

उत्तरी हवाओं ने पारा गिराया, 15.6 डिग्री पहुंचा न्यूनतम तापमान

इंदौर। उत्तरी हवाओं के असर से इंदौर के तापमान में अब गिरावट देखने को मिल रही है। पिछले एक माह से ज्यादा समय से न्यूनतम तापमान सामान्य से अधिक बना हुआ था। शुक्रवार को इस सीजन में पहली बार शहर का न्यूनतम तापमान 15.6 डिग्री पर पहुंचा। शुक्रवार को अधिकतम तापमान 30.2 डिग्री दर्ज किया, जो सामान्य था। मौसम विज्ञानियों के मुताबिक, शनिवार को भी न्यूनतम तापमान में एक डिग्री की गिरावट हो सकती है। इंदौर में अगले दो से तीन दिन तापमान में गिरावट देखने को मिलेगी और उसके बाद फिर से तापमान सामान्य से अधिक देखने को मिलेंगे।

इंदौर में क्यों बदल रहा मौसम- वर्तमान में एक पश्चिमी विक्षोभ अफगानिस्तान से भारत की ओर बढ़ रहा है। वहीं जेट स्ट्रीम हवाएं उत्तर भारत की ओर से प्रदेश की तरफ आ रही है। इसके असर से धीरे-धीरे तापमान में गिरावट देखने को मिल रही है।

- **महू में भी ठंड का अहसास बढ़ा-** इसी तरह महू शहर व आसपास के क्षेत्र में ठंड का असर दिखने लगा है। सुबह 11 बजे तक हल्की धूप के साथ ठंडी हवा महसूस हो रही है। वहीं दिन में धूप तेज होने से अब भी गर्मी का अहसास बना हुआ है। ठंड के आने से अब शाम को अंधेरा भी जल्दी होने लगा है। साथ ही शाम को ठंडक भी बढ़ गई है। लोग ऊनी कपड़ों में नजर आ रहे हैं। आंकड़ों को देखें तो शुक्रवार को दिन का अधिकतम तापमान 28.8 और रात का न्यूनतम तापमान 17 डिग्री सेल्सियस दर्ज किया गया।
- **देवास: रातें ठंडी, दिन में कम हुई धूप की चुभन-** इसी तरह देवास शहर सहित अंचलभर में ठंड ने दस्तक दे दी है। धीरे-धीरे रातें ठंडी होने लगी हैं और दिन में धूप की चुभन भी कम हो रही है। रात और दिन के तापमान में भी काफी अंतर आने लगा है। हालांकि दोपहर में अभी भी गर्मी का अहसास हो रहा है, परन्तु हवा ठंडक भरी है।

अभी दिन में जहां हवाओं का रुख उत्तर व उत्तरी पूर्वी बना हुआ है, वहीं कुछ समय हवाएं शांत भी रह रही है। यही वजह है कि अभी हवाओं के असर से दिन व रात के तापमान में कमी दिखाई दे रही है। रात के समय व अल सुबह शहरवासियों को सर्दी का अहसास हो रहा है। वहीं दिन में धूप निकलने के कारण दोपहर में ठंड से राहत है। कभी-कभी तीखी धूप चुभन का अहसास भी करवा रही है।

इंदौर में ईएसआईसी शुरू करेगा नया मेडिकल कॉलेज

पुराने अस्पताल की बिल्डिंग तोड़कर बनेगा

इंदौर। नंदानगर स्थित ईएसआईसी परिसर में कॉलेज बिल्डिंग का निर्माण अगले साल शुरू होगा। यह बिल्डिंग 40 साल पहले अस्पताल के लिए बनाई बिल्डिंग को तोड़कर बनाया जाएगा। बीमा निगम के अफसरों के अनुसार यह मेडिकल कॉलेज जबलपुर मेडिकल विश्व विद्यालय से संबद्ध रहेगा। भविष्य में परिसर में नर्सिंग कॉलेज भी खुल सकता है। इंदौर में नया मेडिकल कॉलेज खोलने की योजना दस साल पहले बनी थी, लेकिन तब मेडिकल कॉलेज के लिए 50 एकड़ से ज्यादा की जमीन का नियम था और कॉलेज के छात्रों को प्रैक्टिस के लिए बड़े और आधुनिक अस्पताल की जरुरत भी होती है। इस कारण मामला ठंडे बस्ते में रहा।

अब ईएसआईसी ने 500 बेड का अस्पताल बना लिया है। इसका निर्माण 350 करोड़ रुपये की लागत से किया गया है। हाल ही में इसका लोकार्पण वर्चुअली प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी ने किया था। इस अस्पताल में

तीन आपरेशन थिएटर, एक्सरे रुम, एमआरआई रुम, सोनाग्राफी, पैथलॉजी सहित अन्य सुविधाएं भी है। इंदौर संभाग से यहां बीमा निगम से जुड़े कर्मचारी इलाज के लिए आते है। इस कारण मेडिकल छात्रों को प्रैक्टिस में भी आसानी होगी।

अगले माह से टूटने लगेगी अस्पताल की पुरानी बिल्डिंग- बीमा अस्पताल के नाम से पहचानी जाने वाली 40 साल पुरानी बिल्डिंग को तोड़ने का काम अगले माह से शुरू होगा। इस बिल्डिंग का मुआयना केंद्र से आए अफसर कर चुके है। बिल्डिंग के कई हिस्से खतरनाक भी हो चुके है। तोड़ने में चार से छह माह का समय लगेगा। इसके बाद मेडिकल कॉलेज की नई बिल्डिंग का काम शुरू होगा। इस कॉलेज में विभाग यह भी कोशिश कर रहा है कि बीमित कर्मचारियों के बच्चों के लिए भी चयन का कुछ कोटा रहे। इंदौर में अभी एक सरकारी और दो निजी मेडिकल कॉलेज है। अब चौथा मेडिकल कॉलेज खुलेगा।

देशभर में खुलेंगे दस नए मेडिकल कॉलेज- देश में दस नए ईएआईसी अस्पताल कर्मचारी राज्य बीमा निगम खोलेगा। इनमें इंदौर शहर भी शामिल है।

इंदौर में 20 को लगेगा रोजगार मेला

400 युवाओं को जॉब का मौका; व्यवसाय के लिए लोन प्रोसेस में भी मदद

इंदौर। इंदौर में 20 नवंबर को रोजगार मेला आयोजित किया गया है। मेला सुबह 10 बजे से 4 बजे तक आईटीआई, नंदा नगर में आयोजित होगा। इसमें करीब 400 युवाओं को नौकरी का मौका मिलेगा। मेले का आयोजन रोजगार कार्यालय, आईटीआई और जिला उद्योग केंद्र कर रहा है। रोजगार कार्यालय में डिप्टी डायरेक्टर पीएस मंडलोई ने बताया कि मेले के माध्यम से युवाओं को रोजगार के अवसर प्राप्त होने के साथ ही साथ व्यवसाय शुरू करने के लिए लोन की प्रक्रिया भी पूरी कराई जाएगी।

सेल्स एग्जीक्यूटिव समेत कई पदों पर भर्ती- रोजगार मेले में मोजेक वर्क स्कील, जस्ट डॉयल, श्याम मोटर्स, बालाजी सुरक्षा, पटेल मोटर्स, डीटी इंडस्ट्रीज, फार्मा ग्रोथ, मेडिप्लस, दीप्ति इंटरप्राइज, डी एंड एच सेचरोन सहित कई कंपनियों के 400 पदों पर इसके लिए अवसर दिए गए हैं। इसमें सेल्स एग्जीक्यूटिव, टेलीकॉलर, मशीन ऑपरेटर, पैकिंग, सेल्स, टीम लीडर, ड्राइवर, बैक ऑफिस, हेल्पर, इलेक्ट्रिशियन, फिटर, वेल्डर, ऑफिस बॉय के पदों पर भर्ती की जाएगी।

उम्र सीमा 18 से 40 वर्ष के बीच- मेले में कंपनियों के प्रतिनिधि आवेदकों के साक्षात्कार लेकर प्रारंभिक रूप से चयन करेंगे। मेले में शामिल होने वाले आवेदक जिनकी उम्र 18 से 40 वर्ष के बीच और शिक्षा हाई स्कूल से लेकर पीजी (किसी भी विषय में) पास होना चाहिए।

साथ ही तकनीकी योग्यता जैसे आईटीआई पास अभ्यर्थी भी योग्यतानुसार रोजगार प्राप्त कर सकते हैं। मेले में शामिल होने वाले आवेदकों को अपनी सभी शैक्षणिक योग्यतानुसार प्रमाण पत्रों, बॉयोडेटा, अन्य आवश्यक प्रमाण पत्र और आधार कार्ड आदि के फोटो प्रतियां भी आवश्यक रूप से लाना होगा।

'सरकारी नौकरी छोड़े पत्नी और मेरे साथ रहे' पति ने डाला दबाव

तो हाई कोर्ट पहुंची महिला, तलाक पर आया यह फैसला

इंदौर। मध्य प्रदेश हाई कोर्ट की इंदौर खंडपीठ ने नौकरीपेशा महिला के मामले में अहम फैसला सुनाया है। चीफ जस्टिस वसुरेश कुमार कैत और जस्टिस सुश्रुत अरविंद धर्माधिकारी की खंडपीठ ने अपने एक फैसले में कहा है कि किसी कामकाजी महिला को उसकी मर्जी के बिना नौकरी छोड़ने के लिए मजबूर करना क्रूरता है। इसके साथ ही हाई कोर्ट ने महिला ने की तलाक की अर्जी स्वीकार कर ली। महिला ने पहले फैमिली कोर्ट का दरवाजा खटखटाया था, जहां तलाक की याचिका खारिज होने के बाद हाई कोर्ट का रुख किया।

2014 में हुई थी शादी

साथ की प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी- हाई कोर्ट में दायर याचिका के अनुसार, दोनों की शादी 2014 में हुई थी और तभी दोनों प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी के लिए भोपाल शिफ्ट हो गए थे। इसके बाद महिला को केंद्र सरकार के उपक्रम में नौकरी मिल गई। इससे पति को आत्मसम्मान को ठेस पहुंची थी। इसके बाद से ही उसने पत्नी को परेशान करना शुरू कर दिया था।अब पति का कहना है कि जब तक उसकी नौकरी नहीं लग जाती, पत्नी को भी नौकरी छोड़कर उसके साथ भोपाल में रहना होगा।

केंद्र सरकार की नौकरी छोड़ने और भोपाल में साथ रहने को मजबूर कर रहा था पति- महिला की उम्र 33 वर्ष है जो केंद्र सरकार के एक उपक्रम में प्रबंधक के पद पर सेवा दे रही हैं। शादी के बाद पति महिला को नौकरी छोड़ने और अपने साथ भोपाल में रहने के लिए मजबूर कर रहा था। दोनों पक्षों को सुनने के बाद हाई कोर्ट ने कहा, 'पति या पत्नी साथ रहना चाहते हैं या नहीं, यह उनकी मर्जी पर निर्भर है। पति या पत्नी का नौकरी करना या नहीं, पूरी तरह से उसकी इच्छा पर निर्भर है।'

कानून की सख्ती और दोस्ती की मिसाल, कैप्टन पीसी गुप्ता नहीं रहे

इंदौर। कैप्टन पीसी गुप्ता का 14 नवंबर गुरुवार को निधन हो गया। वे इंदौर की नब्ज पहचानने वाले एक ऐसे अधिकारी थे जिनके शहर के अधिकांश जिम्मेदार लोगों से प्रिय संबंध थे। कांग्रेस, भाजपा के नेता हों या फिर शहर के प्रमुख सामाजिक संगठन सभी जगह पीसी गुप्ता के संबंध मिलनसार रहे।

सख्ती और विनम्रता दोनों की मिसाल थे- अभ्यास मंडल के शिवाजी मोहिते ने बताया कि कैप्टन गुप्ता ने इंदौर में एडीएम के रूप में खास पहचान बनाई। कानून का मजाक उड़ाने वालों के लिए वे बहुत सख्त थे और दोस्तों के लिए बेहद विनम्र और रिश्तों को जिंदा रखने वाले थे। एडीएम के पद के बाद उन्होंने इंदौर में नगर निगम आयुक्त का पद भी संभाला। कैप्टन के बाद उनके भाई रामेश्वर गुप्ता भी इंदौर एडीएम रहे।

कानून की सख्ती के लिए पहचाने जाते थे

मोहिते ने बताया कि वे कानून की सख्ती के लिए पहचाने जाते थे। उनके रहते शहर में चक्काजाम, उपद्रव करना असंभव सा था। अपराधियों को सीधे खदेड़ने की उनकी शैली ने कई अधिकारियों को काम करने का नया तरीका सिखाया। शहर हित के लिए वे हमेशा आगे रहते थे। सामाजिक कार्यों से लेकर सार्वजनिक मंचों पर भी उन्होंने हमेशा इंदौर के हित के लिए आवाज उठाई। प्रशासनिक पद पर रहते हुए उन्होंने शहर हित में हरसंभव कार्य किया और रिटायर्ड होने के बाद भी वे सामाजिक कार्यों में सक्रिय रहे। उनसे सलाह लेने के लिए शहर के वरिष्ठ पत्रकार, सामाजिक संगठन हमेशा आते थे।

इंदौर में होगी अजब गजब इश्क की शूटिंग

मेकर्स ने पोस्टर किया लॉन्च

इंदौर। बॉलीवुड में ऐक्शन, क्राइम थ्रिलर के बीच में एक बार फिर प्यार का मौसम लौट रहा है। फ़िल्म अजब गजब इश्क के मेकर्स ने नए चेहरों के साथ एक बेहद ही खूबसूरत सिनेमा की घोषणा की है, जिसका पोस्टर मुम्बई में हम साथ साथ हैं जैसी फिल्मों में काम कर चुके अभिनेता महेश ठाकुर की उपस्थिति में लॉन्च किया गया। इंदौर में इस रोमांटिक कॉमेडी फिल्म को शूट किया जाएगा जिसमें काफी टर्न ट्विस्ट होंगे। एक टिपिकल लव स्टोरी के अलावा फिल्म में बहुत कुछ है जो आप देख पाएंगे। अधिश्री फिल्म्स के बैनर तले बनने वाली फिल्म के लेखक निर्देशक धनंजय कुमार सिंह और निर्माता गगन वर्मा हैं। फिल्मों और टीवी जगत के विख्यात अभिनेता महेश ठाकुर ने निर्माता निर्देशक को फिल्म के लिए बधाई और शुभकामनाएं देते हुए कहा कि उन्होंने फिल्म में लड़की के पिता का रोल किया है। धनंजय कुमार सिंह सुलझे हुए निर्देशक हैं मुझे विश्वास है कि वह एक बेहतर फिल्म बनाएंगे।

डॉक्टरी का पेशा छोड़कर फिल्मों में आए गगन वर्मा- फिल्म के निर्माता गगन वर्मा ने कहा कि मैं डॉक्टरी के पेशे में दस साल से रहा। फिर म्यूजिक, सिनेमा और राइटिंग के शौक की वजह से फिल्म

मेकिंग के क्षेत्र में आया। बेशक अजब गजब इश्क लव स्टोरी है मगर इसकी कथा रियल स्टेट में होने वाली धोखाधड़ी की घटनाओं से प्रेरित है। 23 नवंबर से इंदौर शहर में फिल्म अजब गजब इश्क की शूटिंग शुरू होगी। फिल्म में ईशान शंकर, महेश ठाकुर, कृति वर्मा, बिन्दा रावल, गगन वर्मा, इंदौर के लोकप्रिय सितारे धर्मेंद्र बिलोटिया, शौर्य सक्सेना और साक्षी रॉय भी अहम किरदार में दिखाई देंगे। इस अवसर पर गगन वर्मा के दूसरे प्रोजेक्ट हॉरर थ्रिलर फिल्म हॉफ का पोस्टर भी लांच किया गया, जिसकी स्क्रिप्ट राइटिंग पर काम चल रहा है।

चुलबुली रोमांटिक कहानी से सजी है फिल्म- फिल्म की कहानी, स्क्रीनप्ले और संवाद लिखने वाले डायरेक्टर धनंजय कुमार सिंह ने कहा कि अजब गजब इश्क की स्टोरीलाइन बड़ी रोचक है। फ़्रॉड बिल्डर चावला एक ही फ़्लैट को दो लोगों को बेच देता है। राजवीर वर्मा और आर्ची शर्मा इस फ्लैट के मालिक हैं और प्रॉपर्टी पर मालिकाना फैसला आने तक कोर्ट उन दोनों को एक साथ रहने का फैसला सुनाता है। आपस में नोक झोंक करते करते राजवीर वर्मा और आर्ची शर्मा को एक दूसरे से प्यार हो जाता है। राजवीर, आर्ची के साथ जिंदगी शुरू करने के सपने देखने लगता है और इसी बीच उसे पता चलता हैं कि आर्ची सिर्फ उसे धोखा दे रही है लेकिन राजवीर गहरे प्यार में है। इस अजब गजब इश्क में कई रोमांचक और चौकाने वाले मोड़ आते हैं। देखना दिलचस्प होगा कि इस चुलबुली रोमांटिक कहानी में राजवीर को अपना प्यार मिलता है या नहीं।

फिल्म की कहानी खास होना जरूरी

निर्माता गगन वर्मा इस फिल्म की कथा को ही हीरो मानते हैं। उन्होंने कहा कि इस का पोस्टर जितना कलरफुल और प्यारा लग रहा है, फिल्म भी दर्शकों को उतनी ही प्यारी और कई रंग लिए हुए लगेगी। फिल्म में मुख्य किरदार राजवीर का रोल अभिनेता परम सिंह निभाएंगे। ईशान शंकर भी महत्वपूर्ण भूमिका निभा रहे हैं जो अब्बास मस्तान की फिल्म मशीन और नवरस कथा कोलाज में काम कर चुके हैं।

उनका किरदार काफी रोचक है। फिल्म में म्यूजिक का भी महत्वपूर्ण योगदान होगा। मुख्य भूमिका निभा रहे परम सिंह 13 साल से एक्टिंग कर रहे हैं। उन्होंने बैरी जॉन से एक्टिंग कोर्स किया है और 6 टीवी शो किए हैं। उन्होंने कहा कि उनका किरदार बहुत ही बेहतरीन है। सिलिकॉन वैली से एक लड़का आता है और उसे पता चलता है कि उसका घर किसी और का है। इसी रोमांच में पूरी स्टोरी नरेट होती है। फिल्म में मैं बॉय नेक्स्ट डोर हूं। यह मेरी पहली फिल्म है इसलिए बहुत उत्साहित हूं।

एकल परिवार और बाहर के भोजन से बढ़ रहा मोटापा, हो रही शुगर

इंदौर। विश्व मधुमेह दिवस 2024 के अवसर पर 17 नवंबर को मधुमेह रोग विशेषज्ञ डॉ. संदीप जुल्का द्वारा इंडियन मेडिकल एसोसिएशन और लायंस क्लब के सहयोग से जागरूकता कार्यक्रम आयोजित किए जाएगा। कार्यक्रम के तहत चीनी कम मिठास भरपूर रन - वॉक का आयोजन किया जाएगा, जो मंगल सिटी मॉल से सुबह 6:45 बजे शुरू होगी। इस दौड़ का फ्लैग आफ भारतीय हाकी टीम के कोच मीर रंजन नेगी और मेजर जनरल श्रीकांत नीमा करेंगे। डॉ. संदीप जुल्का ने बताया कि जागरूकता रैली में बीएसएफ के जवान, एनसीसी कैडेट्स, डॉक्टर और मधुमेह साथी शामिल होंगे। रैली मंगल सिटी मॉल से शुरू होकर रेडिसन होटल, बॉम्बे अस्पताल, और सत्य सांई चौराहा होते हुए वापस वहीं समाप्त होगी।

- **चित्रकारी और नृत्य कार्यक्रम भी आकर्षण का केंद्र-** शिविर के दौरान टाइप वन डायबिटीज बच्चे अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन करते हुए चित्रकारी और नृत्य करेंगे। साथ ही, विशेषज्ञ डॉक्टर मधुमेह से बचाव और नियंत्रण के तरीकों पर जानकारी देंगे। इसमें इस बात पर भी चर्चा होगी कि मधुमेह कैसे आंख, गुर्दा और हृदय को प्रभावित करता है। कार्यक्रम में विशेषज्ञों द्वारा मधुमेह के इलाज में हो रहे नए आविष्कारों पर चर्चा की जाएगी। डॉ. जुल्का ने बताया कि जागरूकता बढ़ाने के उद्देश्य से इससे पहले गुरुवार को लायंस क्लब के सहयोग से 15 स्थानों पर शिविर लगाए गए, जिनमें 1100 लोगों की जांच की गई।

कहानी

अम्बिका कुशवाहा 'अम्बी'

शिक्षा बना मुनाफे का व्यापार

आज सुबह मॉर्निंग वॉक पर निकली थी, घर लौटने से पहले सोची थोड़ी सब्जियाँ खरीद लूँ। यह सोच मैं पार्क से निकलते ही चल दी सब्जी मार्केट कि ओर। सब्जी बाजार में पहुँचते ही मेरी नजर एक शख्स पर पड़ी। जाना पहचाना चेहरा.. अरे ये तो अमरजीत भैया है। अमरजीत भैया ने भी मुझे देखते ही पहचान लिया। अमरजीत हमारे घर मे 10 साल पूर्व किरायेदार के रूप में रहते थे। और प्रतियोगी परीक्षाओं कि तैयारी किया करते थे।

अमरजीत भैया ने मुझे देखते ही मेरे पास आए। मैंने हाथ जोड़कर प्रणाम किया। भईया ने भी मुस्कुराते हुए आशीर्वाद दिया।

मैंने कहा- अमर भईया.. सब ठीक है? आप इतने दिनों में भूल ही गए होंगे। अब तो आपकी जॉब भी लग गई होगी।

अमरजीत भैया मुस्कुराते हुए बोले- हाँ सब कुशल चल रहा है। मैंने खुद का कोचिंग संस्थान खोला है। यही पास ही गाँधी पार्क के बगल में।

मैंने कहा - वाह भईया! ये तो बहुत अच्छी बात हैं। किस क्लास के बच्चों को पढ़ाते हो आप?

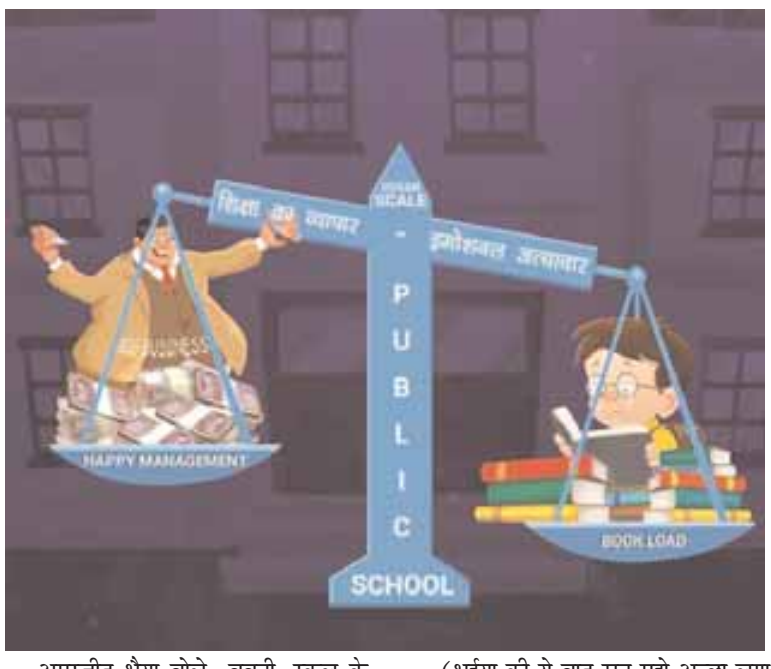

अमरजीत भैया बोले- बबुनी, स्कूल के बच्चों को नहीं बल्कि SSC, रेलवे, बैंकिंग जैसे प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी करवाता हूँ।

(भईया की ये बात सुन मुझे अच्छा लगा क्योंकि एक प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी कर चुका व्यक्ति ही प्रतियोगी परीक्षाओं की तैयारी का महत्व, मेहनत और संघर्ष को भली-भाँति समझ सकता हैं।)

अमरजीत भईया आगे बोले- कोई प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हो, तो हमारे कोचिंग जरूर भेजना। हम उचित कम मूल्य पर गुणवत्तापूर्ण पढ़ाते है।

(मेरी दिमाग में कई कोचिंग सेंटरों के बड़े बोर्ड घूमने लगे। जिसपर लिखा होता है तैयारी कि 100 गारंटी हम लेते हैं)

मैंने पूछा -भईया! आप फीस कितनी लेते हो?

अमरजीत भईया बोले - हमारे कोचिंग फीस सामान्य विषय से लेकर स्पेशल सब्जेक्ट तक रुपये 20,000 से 80,000 तक औसत समझ लो।

(यह सुनकर अब तक जो सोच रही थी अमरजीत भईया के कोचिंग चलाने के बारे में वो सोच मेरी गलत साबित हुई। जो बंदा 10,000 तक कोचिंग फीस भरने के लिए चाय ब्रेड खाकर पढ़ाई करता था। उनकी भी कोचिंग का इतना ज्यादा फीस की मध्यम वर्ग के स्टूडेंट भी फीस का मानसिक तनाव झेलते रहे।)

मैंने कहा - वाह.. भईया वाह! बड़ी कम फीस है। कई कोचिंग तो स्टार्टिंग टाइम 5 प्रतिशत या 10 प्रतिशत डिस्काउंट भी देती है। खैर मैं कोशिश करूंगी। कोई न कोई मिल ही जाएँगे जिसे आपके कोचिंग भेज सकूँ।

(अमरजीत भईया का बदला हुआ चेहरा बता रहा था वो मेरे द्वारा किया गया व्यंग समझ चुके थे। लेकिन उन्हें ये भी पता था कि सामने से प्रत्यक्ष बोलना मेरी आदत हैं।)

मैं सब्जियाँ भी खरीद चुकी थी मैंने अमरजीत भईया से बोला, भईया! अब मैं चलती हुँ ऑफिस भी निकलना है फिर। वहाँ से विदा ले मै घर की ओर चल पड़ी।

रास्ते में मेरे दिमाग में बस यही चल रहा था कितनी महँगी हो गई है शिक्षा। छोटे बड़े स्कूल से लेकर कोचिंग सेंटर तक लाखों की फीस, बाजारों में महँगी हुई किताबें। फीस भरने में घर खेत गिरवी हो जा रहे है। कैसे पढेंगे बच्चे? कैसे बढ़ेंगे युवा? इन सब चीजों के बाद भी बेरोजगारी का अलग दंश।

'सब पढ़े.. सब बढ़े' का नारा खोखला दिख रहा है।

जब शिक्षा ही अति मुनाफे का व्यापार बन चुका है तब क्या ही बनेगा शिक्षा सबका अधिकार?

कविता

बच्चे और हम

अनुपमा श्रीवास्तव 'अनुश्री'

हम बाल दिवस पर
बच्चे- बच्चे चिल्लाते हैं
ये बच्चे, जो हमारा
गुलशन महकाते है
उन्हें आज हम कितना
उपेक्षित कर जाते हैं!
जो बातें हम नहीं कर पाते,
बच्चों से उनकी उम्मीद कर जाते हैं।

दुनिया के उन्नीस प्रतिशत
बच्चे भारत में
कहाँ -कहाँ, किस तरह,
शोषण, कुपोषण
भुखमरी, उपेक्षा,अशिक्षा,
अत्याचार के शिकार
बेबस, लाचार, गरीब,
बीमार, और हम बेईमान,
पैसा होते हुए भी,
सब अपने ऊपर उड़ाते हैं
नारे, स्लोगन, वार्ताएँ
खूब रचाते हैं ।

नन्हें हृदयों को
जबरन अपनी
महत्वाकाँक्षाओं का
शिकार बनाते हैं
आज के पालक ज़बरदस्त,
दोगलापन दिखाते हैं ,
खुद बिगड़े हैं बच्चों को,
सुधारना चाहते हैं,
अपनी कमियों का सारा दोष
इन मासूमों पर मढ़ जाते हैं।

तकनीक ने वय से पहले ही,
बना दिया है उन्हें वयस्क,
क्यों नहीं उन्हें हर बात
प्यार से समझाते हैं !
ज़रा सोचें कितना वक्त
हम उन्हें दे पाते हैं!

खेल बदल गए ,
क़िस्से -कहानी भी!
कागज़ की नाव,
बारिश का पानी भी,
न वो हरियाली , न गाँव
न प्रकृति में खोजबीन,
न पीपल की ठाँव,
चुप सा, सहम गया,
ठिठक गया,
भोला बचपन
कहीं भटक सा गया!

गायब वो अपनापन,
खिलौने, बडों का संरक्षण,
संस्कार,दादी-नानी का दुलार,
अब बस वर्चुअल दुनिया और
ई -गेम्स, गैजेट्स से ही इन्हें प्यार!

पर इस सबके लिए भी,
समाज और परिवार,
ही है ज़िम्मेदार,
यही बच्चे हैं हमारी धरोहर,
भविष्य के कर्णधार।

सभ्य जनों अपने मुखौटे उतारो,
बाल दिवस बधाइयों से पहले,
हक़ीक़त की ज़मीं पर आओ,
अपने गिरेबान में झाँको,
पहले खुद को सुधारो ।

खुद जियो, उन्हें भी जीने दो
सोच समझ,विवेक के साथ
उन्हें अपनी उड़ानें लेने दो
तारों से अपनी दुकान
सँवारने,सजाने दो,
चाँद पर सपनों का,
जहाँ बसाने दो।

कविता

ओटीपी

देवेंद्रसिंह सिसौदिया

आजकल
प्रत्येक
ट्रांजेक्शन पर
ओटीपी
आता है,
जिसका
उपयोग कर
हम आगे बढ़ते हैं ।

कहते हैं
कभी इसे
किसी को
बताना नहीं चाहिए
जी हाँ
यही सच है ।

ठीक उसी प्रकार
जीवन में भी
कभी - कभी
ओटीपी आता है,
अर्थात्
निर्णय लेने का अवसर
स्वयं ने निर्णय लिया
तो
जीवन सुरक्षित
और यदि
यह विकल्प
किसी और को
दे दिया
तो
फिर आपका जीवन
मात्र एक कठपुतली
बन का रह जाता है।

इस बार वो बात नहीं थी

राकेश कुमार मालवीय

चल रहे फुलझड़ी पटाखे
पर देहरी पर आवाज नहीं थी
खुशियां अनमन सी बैठी थीं
डांट नहीं, वो बात नहीं थी
बातों में गुमान था गायब
किस्सा सूने, सूनी बाखर
दीपक, तेल, तर थी बाती
फूल पत्ते, खील बताशे
लिपा हुआ आंगन चकाचक
रिश्ते नाते, पूजा पाठ भी मन से
बिजली भी नहीं पचाती थी
सब कुछ था, पर एक खालीपन
महका करता, जिससे घर आंगन
सूनी सूनी थी खुशियां सब
देहरी पर दादी का न होना
इस दिवाली वो बात नहीं थी।

लघुकथा

रामेश्वरम तिवारी

मोल-तौल, भाव-ताव

प्रोफ़ेसर दीनबंधु विश्वविद्यालयीन सेवा से रिटायर हैं, पर खुद को शिक्षक कहलाना नापसंद करते हैं। उनके एक बेटा और एक बेटी है। बेटा विदेश पढ़ने क्या गया वहीं का होकर रह गया, पर उनको बेटे से कोई गिला नहीं है। वहीं डॉक्टर बिटिया और उसका डॉक्टर पति देश की राजधानी के एक बड़े और नामी हास्पीटल में पदस्थ हैं। यानी उनके घर में पति-पत्नी और एक अनाथ नौकर के सिवाय दूसरा कोई नहीं है।

उनकी दिनचर्या प्रतिदिन सुबह पाँच से शुरू होकर रात की दस बजे तक निर्धारित है। वे प्रातः पाँच बजे उठते हैं। शौचादि से निवृत होकर ठीक छः बजे सुबह और शाम को सात बजे एक घंटे के लिए घूमने को निकल जाते हैं। सुबह लौटते वक्त दूध और शाम को ज़रूरत भर की ताज़ा सब्ज़ियाँ लेते आते हैं। सुबह के समय अपना प्रिय समाचार पत्र एक घंटे तक चाय की चुस्कियों के साथ पढ़ते हैं। मालूम हुआ है कि वे दूरदर्शन कम देखते हैं। चूँकि उनका मानना है कि उस पर मतलब की बातें कम और बकवास ज़्यादा होती है। दूसरी बात यह कि उन्होंने जबसे होश सँभाला है, तब से समाचार-पत्र ही पढ़ते आ रहे हैं। भला, आदमी की आदतें भी क्या कभी उसका पीछा छोड़ती हैं। दरअसल प्रोफेसर दीनबँधु चौबीस घंटे प्रसारित होने वाले दूरदर्शन के इस दौर में भी पत्र-पत्रिका और पुस्तक पठन की एक श्रेष्ठ मिसाल हैं।

उनके घर के दाएँ-बाएँ दोनों ओर सेवानिवृत्त बड़े साहब के आलीशान बँगले हैं। बड़े साहबों के परिवार और बच्चे-बच्चियाँ के बारे में कॉलोनी में किसी को कुछ पता

नहीं है। दोनों साहब दिन भर क़ैदियों की तरह अपने घर में बंद रहते हैं। उनको किसी से मिलते-जुलते, हँसते-बतियाते हुए आज तक किसी ने नहीं देखा है। पड़ोसी होने के नाते प्रोफ़ेसर दीनबँधु का रिश्ता उनके साथ महज़ औपचारिक है। चूँकि कभी-कभार नज़रें मिलने पर दुआ-सलाम हो जाती है। कभी-कभार सुबह-शाम अपने कुत्तों को घुमाते हुए दिखाई दे जाते हैं। दोनों बड़े साहब कम बोलते हैं, पर जबभी बोलते हैं, तो उनकी अहं भरी बातों से वातावरण दुर्गंध से प्रदूषित हो उठता है। इसलिए दीनबँधु की उनके साथ जरा कम ही ट्यूनिंग बैठती है। उन्होंने अक्सर गौर किया है कि दोनों साहब लोग सब्ज़ी-भाजी ख़रीदते वक्त मोल-तौल करने लगते हैं। जबकि दीनबँधु को कभी किसी ने सब्ज़ी वालों से भाव-ताव करते नहीं देखा। वे बिना झिकझिक किए सब्ज़ी वाला जितने रुपए कहता है अपनी जेब से निकालकर कीमत चुकता कर देते हैं।

लघुकथा

अविनाश अग्निहोत्री

खिड़की

क्या हुआ मां यूं उदास क्यों बैठी हो। मजाक में कही बात का बुरा मान मामाजी आज रक्षाबंधन पर भी घर नही आए थे। मामाजी के इस व्यवहार से खिन्न मां सुधा के मन को टटोलने के लिए शिशिर ने पूछा।

कुछ नही रे,देख पिछले कई माह से इस पौधे में खाद पानी आदि सब कर रही हूं।पर ये है कि बढ़ने का नाम ही नही ले रहा।

मां ने शिशिर को टालने की नियत से बोला,तब उसने मुस्कुराकर कहा। मां एक पौधे को बढ़ने के लिए सिर्फ खाद पानी ही

नहीं बल्कि खुली हवा और धूप भी आवश्यक होती है। तो जब तक आप ये खिड़की नही खोलेंगी ये बेचारा बड़ा कैसे होगा।

आज शिशिर कि बात से सुधा के मन में उसकी मां की कही वह बात अचानक कौंध गई कि जीवन के किसी मोड़ पर कभी कभी मजबूत रिश्तों में भी शुष्कता आ सकती है।

पर हमें अपनो से बातचीत की खिड़की सदैव खुली रखनी चाहिए। ताकि आपसी गलतफहमी दूर हों और मन का मैल धुल जाए।

पुस्तक समीक्षा

सत्य प्रकाश 'शिक्षक'

समीक्षक

लोक संवेदनाओं का दस्तावेज 'भीगते सावन'

सुरेश सौरभ की 'भीगते सावन' नवीनतम कृति है जिसमें उनकी 11 कहानियां संकलित हैं, यह अभी जल्द ही दिल्ली के प्रतिष्ठित प्रकाशन अद्रिक पब्लिकेशन से प्रकाशित हुआ है। अलग-अलग परिस्थितियों से निःसृत ये कहानियाँ लोक संवेदनाओं का अनूठा दस्तावेज सा प्रतीत होता हैं, जहां रैली, पटाक्षेप, आतंकी व आखिरी खत जैसी कहानियाँ जीवन के गंभीर विषयों पर आधारित हैं तो 'भीगते सावन' पावस की भीनी-भीनी फुहार से हर्षित करती कहानी भी है, जो दो पीढ़ियों के संघर्ष को प्रदर्शित करती है। पुरानी परंपराओं पर 'एक था ठठेरा' और आधुनिकता के युग में माता-पिता के प्रति औलाद की निष्ठुरता को प्रदर्शित करती कहानी 'औलाद के आंसू' पाठक के तन-मन को नव चेतना से सराबोर कर देती है । आज की भ्रष्ट व्यवस्था की पोल खोलती 'प्रकाश चला गया' कहानी अपने सशक्त कथानक से पाठक को बहुत कुछ सोचने को विवश कर देती है।

इस प्रकार प्रस्तुत कहानी संग्रह लोक संवेदनाओं का ऐसा रेला सा है, जिसमें पाठक डूबता

और उतरता रहता है।

'विश्वास लौट आया' नामक कहानी उस आधुनिक युवक की है, जो साधारण परिवार से पला-बढ़ा है लेकिन उसके अधिकारी बनने पर, उसके पालक माता-पिता ही निष्प्रयोज्य हो जाते हैं, जिन्हें वह वृद्ध आश्रम में छोड़ने जाता है, तब वहां जब उसे पता चलता है कि उसके पिता ने उसे ऐसे ही वृद्ध आश्रम, अनाथ आश्रम से गोद लिया था, तो उसे अपनी गलती का एहसास होता है और वह अपने पिता को ससम्मान घर ले आता है। शिक्षित समाज में अंधविश्वास पर चोट करती समसामयिक कहानी है 'आखिरी खत' जो कोरोना काल के मृत्यु भोज जैसे कर्मकांड की पृष्ठभूमि पर बुनी गई है । कोरोना काल में पिता की मृत्यु पर भोज की प्रथा के कारण उसके बेटे को घर रेहन रखने की जब नौबत आ जाती है। तब वह आत्महत्या को विवश हो जाता है। इस प्रकार अप्रासंगिक हो चुके धार्मिक कर्मकांडों पर लिखी गई यह एक सशक्त रचना है। आज की भ्रष्ट व्यवस्था, परंपरागत अंधविश्वास और रूढ़ियों में जकड़े समाज के गंभीर मुद्दों पर सौरभ जी अपनी लेखिनी चलाने में सिद्धहस्त हैं। कहानियों में दृश्य चित्रण सजीव और कथानक चुस्त है, जो कहानियों को पठनीय बनाता है। कुशल भाषा शैली उनकी लेखिनी की विशेषता है, जो विश्वास जगाती है कि भविष्य में वे अपनी कृतियों से साहित्य जगत को और समृद्ध करेंगे। संग्रह की मार्मिक भूमिका प्रसिद्ध कथाकार सुधा जुगरान ने लिखी है। सुरेश सौरभ को उनके प्रथम कहानी संग्रह 'भीगते सावन' के लिए अनंत शुभकामनाएं।

पुस्तक-भीगते सावन (कहानी संग्रह लेखक-सुरेश सौरभ)
प्रकाशन- अद्रिक पब्लिकेशन प्रा. लि नई दिल्ली
मूल्य-160 रूपए

सुबह सवेरे मीडिया एल. एल. पी. के लिए उमेश त्रिवेदी द्वारा पी. जी. इंफ्रास्ट्रक्चर एण्ड सर्विसेस प्रा.लि., राउखेड़ी, देवासरोड, इंदौर से मुद्रित एवं 662, साईंकृपा कॉलोनी, बॉम्बे हॉस्पिटल के सामने, इंदौर से प्रकाशित।

प्रधान संपादक-उमेश त्रिवेदी
संपादक(म.प्र.)-गिरीश उपाध्याय
वरिष्ठ संपादक-अजय बोकिल
स्थानीय संपादक-हेमंत पाल
प्रबंध संपादक-अरुण पटेल

(सभी विवादों का न्याय क्षेत्र इंदौर रहेगा)
RNINo.MPHIN/2015/66040,
MobileNo.:09893032101
Email-subahsaverenews@gmail.com

'सुबह सवेरे' में प्रकाशित विचार लेखकों के निजी मत हैं। इनसे समाचार पत्र का सहमत होना आवश्यक नहीं है।

कला

पंकज तिवारी

कला समीक्षक

मद्रास एवं कलकत्ता कला विद्यालय तथा पाठ्यक्रम

पहले भारत गांवों में बसता था, भारत को देखने समझने के लिए गांवों को नजदीक से देखने समझने की आवश्यकता होती थी। भारतीय लोग हमेशा से शांति पसंद लोग थे। अपने खुशियों में खुश तथा दूसरों के दुःखों में साथ खड़े होने वाले लोग थे। भारतीय कभी किसी का अनभल नहीं चाहते थे पर दुर्भाग्य ही कह सकते हैं कि हमारे शान्तिप्रियता को बाहरी लोगों द्वारा कमजोरी समझा गया और हमेशा कोई न कोई भारतीय भूमि पर गिद्धों की भांति नजर गड़ाते हुए आ ही जाते थे। मुगलों के बाद अंग्रेजी सत्ता भी ऐसे ही आई थी। लोगों की जरूरतें सीमित थी। खाना, पीना मस्त रहना और जी तोड़ मेहनत करना हर भारतीयों का यही फंडा था। सभी की जरूरतें गांवों में ही पूरी हो जाती थी फलतः शहर पनपना तो चाहता था पर गांवों के खुशहाल जीवन के बदौलत पनप नहीं पाता था। लोग अपने पारंपरिक कार्यों को ही आगे बढ़ाते हुए खुश थे। कम से कम गुलामी से तो मुक्त थे। छोटों और बड़ों को मान-सम्मान मिलता था। मनुष्यता सभी के जेहन में थी। खेती-बाड़ी और पशुपालन का अच्छा सामंजस्य रहता था पर बाहरी आक्रमण कारियों से भारत हमेशा ही परेशान रहा। स्कॉटलैंड के जेम्स मिल, जो अर्थशास्त्री और राजनीतिक दार्शनिक थे, को लगता था कि पूरे एशिया का सामाजिक ताना-बाना सभ्यता के मामले में यूरोप से बहुत पीछे है। मिल के नजर में पूरे भारत पर ब्रिटिश शासन इस लिए जरूरी था ताकि भारत सभ्यता के राह पर आगे बढ़ सके। लोग अपने को श्रेष्ठ समझने के दंभ से बाहर कब आएंगे? तब भी नहीं आए थे। सीमित सोच को वैश्विक स्तर पर विस्तारित करने के पीछे की मानसिकता आज से नहीं अपितु हमेशा से ही रही है। दूसरा उदाहरण जेम्स रेनेल का है जिनका काम ब्रिटिश शासन में भारत का मानचित्र तैयार करना था, जिनके मानचित्र के आवरण पर बने एक कृति में विद्वान ब्राह्मणों द्वारा ब्रिटेनिया जो ब्रिटिश सत्ता की द्योतक थी, को हिंदुओं की पवित्र पुस्तकें भेंट दी जा रही है और जिसके बारे में जिक्र है कि भारतीय लोग स्वेच्छा से प्राचीन पवित्र ग्रंथ ब्रिटेनिया को सौंप कर उनसे यहां आने का आग्रह कर रहे हैं ताकि हमारे संस्कृति और पवित्र ग्रंथों की रक्षा की जा सके। खुद को महान दर्शाने हेतु कहां तक गिरा जा सकता है, यहां आसानी से देखा जा सकता था। ऐसे ही समीक्षक और इतिहासकार को पढ़कर हम भारतीय भी गर्व की अनुभूति करते हैं। दौर बीता और नील की खेती सहित और भी व्यापारिक खेती जिसे भारत से बाहर भेजा जाता था, जिसमें भारतीयों का खून पसीना बहता था का विरोध भी शुरू हुआ, खेती ना करने का प्रण भी लिया जाने लगा जबकि उधर से आये दिन नये कानून बन रहे होते थे जिसमें धर्म परिवर्तन कर इसाई बनने वालों को तमाम रियायतें बख्शी जा रही थी, अंग्रेजी शिक्षा को बढ़ावा देने हेतु तमाम प्रयोग किए जा रहे थे। भारतीय संस्कृति और संस्कारों पर भी लगातार प्रहार किए जा रहे थे। कुछ महीनों और वर्षों के अध्ययन के बाद संस्कृत के ग्रन्थों को यूरोपीय ग्रन्थों से हीन बताया जाने लगा था। भारतीय रचनात्मकता को हीनता की दृष्टि से देखा जाने लगा था। भारतीय रचनाकारों को अंधविश्वासों से भरा माना जाने लगा था। ऐसे समय में शिक्षा के साथ ही कला पर भी यूरोपीय प्रभाव लाने हेतु कार्य किया जाने लगा था जबकि भारतीय कलाकारों में कुछ को छोड़कर अधिकतर ने इन सभी के दवाब में आकर पहले ही अपने क्षेत्र बदल लिए थे।

ब्रिटिश शासकों को ये यकीन हो गया था कि भारतीय लोग शांत स्वभाव के साथ ही हुनरमंद भी हैं यदि इन्हें प्रशिक्षित कर दिया जाए तो ये बहुत कुछ नया कर सकते हैं और इनके हुनर को यूरोप के बाजार में आसानी से भुनाया जा सकता है। इसी को ध्यान में रखते हुए रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स लंदन के सिद्धांतों पर भारत में कुछ कला विद्यालय खोले गए जिनमें मद्रास का नाम सर्वोपरि है। मद्रास, कलकत्ता, बंबई, लाहौर कला विद्यालय के बाद और भी विद्यालय खुले जिनका जिक्र क्रमशः होगा। कला विद्यालयों के खोलने का मुख्य प्रयोजन उस समय चित्र, मूर्ति के साथ ही ड्राइंग, अलंकृत मृदभांड, काष्ठ कला, धातुओं की कला आदि पर भी कार्य करना था। मद्रास कला विद्यालय के पीछे सारा श्रेय अलेक्जेंडर हंटर को जाता है जिन्होंने चिकित्सा के साथ ही कला में भी प्रशिक्षण प्राप्त किया था। 1 मई 1850 को एक निजी संस्थान के रूप में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट की स्थापना हंटर ने ही की थी। मद्रास

कला विद्यालय में कला में रूचि रखने वाले बच्चों को दाखिला दिया जाता था जहाँ कला, शिल्प के साथ ही दैनिक उपयोग में आने वाली वस्तुओं को और भी परिष्कृत कर सौंदर्यबोध के साथ प्रदर्शित करना सिखाया जाता था। मिट्टी के बर्तनों में भी कई प्रकार के प्रयोग किए जाते रहे थे। अपने हुनर को और भी परिष्कृत रूप से प्रस्तुत करने का बढ़िया माध्यम बन गया था मद्रास कला विद्यालय। शुरुआत में पारंपरिक कलाकारों और उनके धातु, फर्नीचर आदि के कार्य भी होते रहे थे। हंटर अपने वेतन और बेची गई पेंटिंग्स के माध्यम से हर महीने विद्यालय को सहयोग भी करते रहे थे। 1851 में उपयोगी कला का विभाग भी स्थापित हो गया। 1852 में ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया और इसका नाम बदलकर गवर्नमेंट स्कूल ऑफ इंडस्ट्रियल आर्ट्स कर दिया गया फिलहाल उस विद्यालय को गवर्नमेंट कॉलेज ऑफ फाइन आर्ट्स के नाम से जाना जाता है। 1884 से लगभग एक दशक तक ई.वी. हैवेल यहां के अधीक्षक पद पर कार्य किए जो आगे चलकर कलकत्ता विद्यालय चले गये और अवनींद्रनाथ टैगोर के साथ मिलकर कला के बड़े क्रान्तिकारी कदम उठाने में अहम भूमिका निभाई। (संलग्न कृति अवनीन्द्रनाथ टैगोर की भारत माता है)

देवी प्रसाद रॉय चौधरी 1928 में मद्रास स्कूल ऑफ आर्ट के उप प्राचार्य बनाए गए उन्हें 1929 में भारतीय मूल का पहला प्राचार्य बनने का सौभाग्य भी प्राप्त हुआ। कला विद्यार्थियों में अधिकांश शौकिया और उच्च वर्ग से थे जिन्हें भारतीय कला के बारे में कुछ खास जानकारी नहीं थी और जो अपने शिक्षकों की भांति ही विदेशी पद्धति पर कार्य करना चाहते थे। अधिकतर छात्र विदेशी पद्धति को खुद में आत्मसात कर लिए थे जिनको जगने में काफी समय लग गया या कह सकते हैं कि अवनीन्द्रनाथ और हैवेल के क्रांतिकारी कदम के बाद की जागरूकता ने ही इन सभी को भी प्रभावित किया।

मद्रास के बाद और भी कला विद्यालय खोले गए जिनमें अगला नंबर कलकत्ता कला विद्यालय का था। कलकत्ता कला विद्यालय भी शुरू में निजी विद्यालय के रूप में ही रहा जिसकी स्थापना 16 अगस्त 1854 को गरनाहाटा चितपुर में हुआ था। तीन महीने बाद विद्यालय को मुट्ठी लाल सील के इमारत में स्थानांतरित कर दिया गया। 1859 में गैरिक कला विद्यालय से प्रधानाध्यापक के रूप में जुड़े। करीब पांच वर्ष बाद ये विद्यालय सरकार के अधीन हो गया जिसके बाद 29 जून 1864 को हेनरी होवर लोके को यहां का प्रिंसिपल नियुक्त किया गया। लोके यहां के शिक्षा व्यवस्था और पाठ्यक्रम पर लगातार काम करते रहे पर दुर्भाग्य कहा जा सकता है कि विदेशी असर से बाहर का मामला नहीं बन पा रहा था। विद्यालय की जगह भी बदलती रही। बाद में सहायक प्रधानाध्यापक का पद भी सृजित हुआ और 1848 में जन्में कलाकार ओलिंटो. गिलहार्डी को जनवरी 1886 में नियुक्त किया गया। जुलाई 1896 में प्रधानाचार्य के रूप में अर्नेस्ट बिनफिल्ड हैवेल की नियुक्ति हुई। हैवेल भारतीय कला के प्रति पहले से ही सम्मान की दृष्टि रखते थे। मद्रास के पाठ्यक्रम से वे पहले से ही दुखी थे यहां भी वही देखकर अब उनके मन में कुछ विशेष करने का जज़्बा जाग उठा। उनका मानना था कि भारतीय छात्रों को पाश्चात्य प्रभाव से इतर अपने भारतीय कला का ही अध्ययन करना चाहिए और उसी मार्ग पर अनुसंधान करते हुए आगे बढ़ना चाहिए। भारतीय कला की थाती इतनी विशद है कि थाह पाना मुश्किल है फिर क्यों न हम अपने पर ही ध्यान दें। हालांकि उन पर भारतीय छात्रों और कला पारखियों द्वारा अपनी शैली को न सिखाने का भी आरोप लगा पर इन सभी से अलग वो अपने कार्य में लगे रहे और भारतीय कला के विकास पर लगातार जोर देते रहे। हैवेल ने गैलरी में लगे चित्रों को बदलकर भारतीयता का जामा पहना दिया और भारतीय छात्रों में भारतीय कला थाती को लेकर आत्मविश्वास बढ़ाते रहे फलतः अजंता सहित और भी भारतीय कला की अनुकृति पर काम होने लगा। 'भारतीय चित्र वीथि' स्थापित करने का श्रेय भी उन्हीं को है। जागरूकता फैलाने हेतु उन्होंने भारतीय कला के आदर्श, भारतीय कला में हिमालय सहित

कई महत्वपूर्ण किताबें और आलेख भी लिखे। छात्रों को भारतीय कला से परिचय कराने में उनकी सहायता अवनीन्द्रनाथ टैगोर ने की, जिनके साथ ने ई. बी. हैवेल को बहुत बल दिया। अर्नेस्ट बिनफील्ड हैवेल 1905 तक वहां प्रिंसिपल के पद पर रहे। अवनीन्द्रनाथ इस कला विद्यालय में बहुत समय तक उप-प्रधानाचार्य के पद पर रहे। पर्शी ब्राउन जिनके कला की शिक्षा रॉयल एकेडमी ऑफ आर्ट्स से हुई और जो इसके पहले लाहौर के मेयो स्कूल ऑफ आर्ट्स के प्रिंसिपल भी रह चुके थे अब कलकत्ता विद्यालय के प्रिंसिपल बने। ब्राउन की पहचान कला इतिहासकार के रूप में भी रही है। अवनीन्द्रनाथ के शिष्यों की पूरी एक फेहरिस्त तैयार हो गई जो आने वाले समय में भारतीय कला को बहुत प्रभावित करने वाले थे। प्रिंट मेंकिंग के अध्ययन हेतु विदेश जाने वाले पहले भारतीय कलाकार मुकुल चंद्र डे को 1928 में कलकत्ता कला विद्यालय के पहले भारतीय स्थाई प्रधानाचार्य के रूप में नियुक्त होने का भी श्रेय प्राप्त है।

उपलब्धि

डॉ. रामानुज पाठक

विश्व में तेजी से तरक्की कर रहा है, भारत

क्षेत्रफल की दृष्टि से विश्व का सातवां बड़ा देश, जनसांख्यिकी की दृष्टि से लगभग प्रथम देश,हर छठवां विश्व नागरिक भारतीय,औसत आयु में सबसे युवा देश और लगभग दो से ढाई दशक तक सबसे युवा देश बन रहने के अंदेशे के साथ तेजी से बढ़ती कुलांचें मारती अर्थव्यवस्था वाला देश,विश्व की सबसे बड़ी मानव पूंजी वाला देश भारत विश्व में तेजी से तरक्की करता हुआ विकसित देश बनने की दिशा में रफ्तार पकड़ चुका है । 2047 तक जब आजादी की स्वर्णजयंती मनाई जाएगी तब भारत विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन चुका होगा।औरये यूं ही हवा हवाई बातें नहीं बल्कि इसके कई सटीक कारण हैं,जैसे- भारत की अर्थव्यवस्था दुनिया में पांचवीं सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था है, और यह तेजी से बढ़ रही है तथा 2047 तक विश्व की तीसरी सबसे बड़ी अर्थव्यवस्था वाला देश बन जाएगा।

भारत में तकनीकी क्षेत्र में तेजी से प्रगति हो रही है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था और शिक्षा में सुधार हो रहा है। भारत में शिक्षा के क्षेत्र में सुधार हो रहा है, जिससे देश के युवाओं को बेहतर अवसर मिल रहे हैं।

स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार: भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में सुधार हो रहा है, जिससे देश की जनसंख्या का स्वास्थ्य बेहतर हो रहा है।भारत में आधारभूत ढांचे में सुधार हो रहा है, जिससे देश के विकास में तेजी आ रही है। भारत में विदेशी निवेश में वृद्धि हो रही है, जिससे देश की अर्थव्यवस्था में तेजी आ रही है।

भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम तेजी से विकसित हो रहा है, जिससे देश के युवाओं को नए अवसर मिल रहे हैं। भारत में डिजिटल इंडिया अभियान के तहत देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने का प्रयास किया जा रहा है।

इन सभी कारकों के संयोजन से भारत विश्व में तेजी से तरक्की कर रहा है।भारत का आर्थिक विकास विश्व में सबसे तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है। विश्व बैंक की रपट के अनुसार, भारत की आर्थिक विकास दर 2047 तक उच्च मध्य आय के दर्जे तक पहुंचने की आकांक्षा के साथ आगे बढ़ रही है ।

भारत की आर्थिक विकास दर विश्व में सबसे तेजी से बढ़ता हुआ दिखाई दे रहा है, जो 2023-24 में 8.2 फीसद की तीव्र गति से विकसित हुआ है। बुनियादी ढांचे में सार्वजनिक निवेश से विकास को गति मिली है ।रियल एस्टेट में बढ़ते घरेलू निवेश से विकास को गति मिली है ।कृषि क्षेत्र में कम प्रदर्शन के बावजूद उत्पादन क्षेत्र में 9.9 फीसद की वृद्धि हुई है। सेवाओं के क्षेत्र में स्थिरता बनी रही है ।भारत की तकनीकी प्रगति विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान पर है। भारत ने विज्ञान और प्रौद्योगिकी में कई उपलब्धियां हासिल की हैं, जैसे कि अंतरिक्ष अनुसंधान, सॉफ्टवेयर विकास, और आईटी सेवाओं में अग्रणी भूमिका ।

भारत सॉफ्टवेयर और आईटी सेवाओं के लिए एक प्रमुख गंतव्य है, जिसमें कई वैश्विक कंपनियां अपने ऑपरेशन्स के लिए भारत को चुनती हैं ।

भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन (इसरो) ने कई सफल लॉन्च किए हैं और मंगल और चंद्रमा पर मिशन भेजे हैं ।भारत में डिजिटल भुगतान की व्यवस्था तेजी से बढ़ रही है, जिसमें यूपीआई (यूपीआई) जैसी तकनीकें प्रमुख भूमिका निभा रही हैं ।भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम तेजी से विकसित हो रहा है, जिसमें कई यूनिकॉर्न कंपनियां हैं जिनका मूल्यांकन अरबों डॉलर में है ।

इन सभी क्षेत्रों में भारत की तकनीकी प्रगति ने देश को विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान दिलाया है और इसकी आर्थिक विकास में भी महत्वपूर्ण योगदान दिया है ।भारत में शिक्षा में तेजी से सुधार हो रहा है, जिसके परिणामस्वरूप देश में शिक्षा की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। सर्व शिक्षा अभियान (एस एस ए) के तहत प्राथमिक शिक्षा में पहुंच बढ़ी है।प्राथमिक शिक्षा में नामांकन दर में वृद्धि हुई है। शिक्षकों की गुणवत्ता में सुधार के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।माध्यमिक शिक्षा में नामांकन दर में वृद्धि हुई है। विद्यालयों में बुनियादी सुविधाओं में सुधार किया गया है। विद्यार्थियों को व्यावसायिक प्रशिक्षण देने के लिए कार्यक्रम आयोजित किए जा रहे हैं।उच्च शिक्षा में नामांकन दर में वृद्धि हुई है। विश्वविद्यालयों और कॉलेजों में शोध और विकास के लिए सुविधाएं बढ़ाई गई हैं। ऑनलाइन शिक्षा को बढ़ावा दिया जा रहा है। डिजिटल शिक्षा को बढ़ावा देने के लिए ई-लर्निंग प्लेटफ़ॉर्म विकसित किए गए हैं। विद्यार्थियों को ऑनलाइन पाठ्यक्रम उपलब्ध कराए जा रहे हैं। शिक्षकों को डिजिटल शिक्षा के लिए प्रशिक्षित किया जा रहा है।नई शिक्षा नीति (2020) के तहत शिक्षा में सुधार के लिए कई योजनाएँ बनाई गई हैं। शिक्षा में सुधार के लिए राष्ट्रीय शिक्षा आयोग (एनईसी) का गठन किया गया है।शिक्षा में सुधार के लिए कई राज्यों में शिक्षा सुधार योजनाएँ बनाई गई हैं।

इन सभी प्रयासों से भारत में शिक्षा में तेजी से सुधार हो रहा है, जिससे देश के युवाओं को बेहतर भविष्य के लिए तैयार किया जा रहा है।भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में तेजी से सुधार हो रहा है, जिससे देश की स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है। वैश्विक स्वास्थ्य कवरेज (यूएचसी) के उद्देश्य को पूरा करने के लिए भारत सहित सभी संयुक्त राष्ट्र के सदस्य देश सहमत हुए हैं, जो कि सतत विकास लक्ष्यों के रूप में होगा ।सरकार ने स्वास्थ्य बुनियादी ढांचे में सुधार के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। सरकार ने डॉक्टरों और स्वास्थ्य कर्मियों की संख्या में वृद्धि के लिए कई कदम उठाए हैं। सरकार ने स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच में वृद्धि के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं।सरकार ने स्वास्थ्य शिक्षा में सुधार के लिए कई कदम उठाए हैं।इन सभी प्रयासों से भारत में स्वास्थ्य सेवाओं में तेजी से सुधार हो रहा है, जिससे देश की स्वास्थ्य सेवाओं की गुणवत्ता में सुधार हो रहा है।भारत में आधारभूत ढांचे में तेजी से सुधार हो रहा है, जिससे देश की आर्थिक विकास और जीवन स्तर में सुधार हो रहा है। सड़कें और राजमार्ग-भारत में सड़कों और राजमार्गों का निर्माण तेजी से हो रहा है, जिससे परिवहन में सुधार हो रहा है। रेलवे के आधुनिकीकरण और विस्तार के लिए कई परियोजनाएं चल रही हैं। भारत में विमानपत्तनों का विकास और आधुनिकीकरण किया जा रहा है। भारत के बंदरगाहों का विकास और आधुनिकीकरण किया जा रहा है। भारत में ऊर्जा क्षेत्र में सुधार हो रहा है, जिसमें सौर ऊर्जा और पवन ऊर्जा पर ध्यान दिया जा रहा है। भारत में जल संसाधनों के विकास और प्रबंधन में सुधार हो रहा है।

भारत के शहरों में विकास और आधुनिकीकरण के लिए कई परियोजनाएं चल रही हैं। भारत में डिजिटल ढांचे का विकास हो रहा है, जिसमें इंटरनेट और मोबाइल कनेक्टिविटी पर ध्यान दिया जा रहा है।इन सभी क्षेत्रों में सुधार से भारत की आर्थिक विकास और जीवन स्तर में सुधार हो रहा है।भारत में विदेशी निवेश तेजी से बढ़ रहा है, जो देश की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान दे रहा है। वित्त वर्ष 2021-22 में भारत ने 83.57 अरब अमेरिकी डॉलर का सबसे अधिक वार्षिक प्रत्यक्ष विदेशी निवेश (एफडीआई) हासिल किया, जो अब तक किसी भी वित्त वर्ष में सबसे अधिक है ।भारत में एफडीआई में पिछले 20 वर्षों में 20 गुना वृद्धि हुई है, जो देश को एक पसंदीदा निवेश गंतव्य के रूप में स्थापित करती है। विनिर्माण क्षेत्र में एफडीआई इक्विटी में 76 फीसद की वृद्धि हुई है, जो देश के विनिर्माण क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाओं को दर्शाती है ।

कंप्यूटर और हार्डवेयर केक्षेत्र में सबसे अधिक विदेशी निवेश हुआ है, जो देश के आईटी क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाओं को दर्शाता है।ऑटोमोबाइल उद्योग के क्षेत्र में भी विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है, जो देश के ऑटोमोबाइल क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाओं को दर्शाता है। सेवा क्षेत्र में भी विदेशी निवेश में वृद्धि हुई है, जो देश के सेवा क्षेत्र में वृद्धि की संभावनाओं को दर्शाता है। इन सभी क्षेत्रों में विदेशी निवेश की वृद्धि से भारत की आर्थिक विकास में महत्वपूर्ण योगदान हो रहा है।भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम विश्व में तीसरा सबसे बड़ा इकोसिस्टम है, जिसमें 100 से अधिक यूनिकॉर्न कंपनियां हैं। भारत में स्टार्टअप इकोसिस्टम की वृद्धि में कई कारक योगदान दे रहे हैं।भारत सरकार ने स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा देने के लिए कई योजनाएं शुरू की हैं। भारत में स्टार्टअप में निवेश में वृद्धि हुई है, जिसमें वेंचर कैपिटल, प्राइवेट इक्विटी और एंजेल निवेश शामिल हैं। भारत में तकनीकी उन्नति ने स्टार्टअप को नए अवसर प्रदान किए हैं। भारत में युवा उद्यमिता की वृद्धि ने स्टार्टअप इकोसिस्टम को बढ़ावा दिया है।

स्टार्टअप के प्रमुख क्षेत्र आईटी और सॉफ्टवेयर,ई-कॉमर्स, फिनटेक, हेल्थटेक, एजुकेशन टेक, स्वच्छ ऊर्जा(क्लीन एनर्जी)। भारत के प्रमुख स्टार्टअप हब के रूप में बैंगलोर,दिल्ली एनसीआर,मुंबई,हैदराबाद,चेन्नई जैसे महानगर विशेष क्षेत्र बन गए हैं।यद्यपि स्टार्टअप इकोसिस्टम में चुनौतियाँ भी अच्छी खासी हैं जैसे ;नियामक ढांचे में सुधार,निवेश में वृद्धि,तकनीकी उन्नति में निवेश,उद्यमिता की संस्कृति को बढ़ावा आदि की दरकार स्टार्टअप इकोसिस्टम को है।

इन सभी कारकों के संयोजन से भारत का स्टार्टअप इकोसिस्टम विश्व में एक महत्वपूर्ण स्थान पर है।भारत में डिजिटल इंडिया अभियान एक महत्वाकांक्षी परियोजना है जिसका उद्देश्य देश को डिजिटल रूप से सशक्त बनाना है। इसकी शुरुआत 1 जुलाई 2015 को हुई थी और इसका मुख्य ध्येयवाक्य है 'पॉवर टू इंपावर'। डिजिटल इंडिया के तीन मुख्य घटक हैं-डिजिटल आधारभूत ढाँचे का निर्माण करना, इसमें ब्रॉडबैंड हाईवे, मोबाइल कनेक्टिविटी और पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम शामिल हैं।इलेक्ट्रॉनिक रूप से सेवाओं को जनता तक पहुंचाना, इसमें ई-गवर्नेंस, ई-क्रांति और सभी के लिए सूचना शामिल हैं।डिजिटल साक्षरता, इसमें नौकरियों के लिए आईटी और इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण शामिल हैं ।

इस परियोजना का उद्देश्य ग्रामीण इलाकों को उच्च गति का इंटरनेट के माध्यम से जोड़ना भी है। डिजिटल इंडिया को कार्यान्वयित करने से पहले कई चुनौतियों को दूर करना होगा, जैसे कि लीगल फ्रेमवर्क, गोपनीयता का अभाव, डाटा सुरक्षा नियमों की कमी और नागरिक स्वायत्तता हनन। डिजिटल इंडिया अभियान को समृद्ध बनाने वाले घटकों की विस्तृत जानकारी भी आवश्यक है,जैसे;ब्रॉडबैंड हाईवे, उच्च गति वाले इंटरनेट की सुविधा प्रदान करने के लिए ब्रॉडबैंड नेटवर्क का विस्तार,मोबाइल कनेक्टिविटी को हर गांव और शहर तक पहुंचाना,पब्लिक इंटरनेट एक्सेस कार्यक्रम, सार्वजनिक स्थानों पर इंटरनेट की सुविधा प्रदान करने के लिए, ई-गवर्नेंस, सरकारी सेवाओं को ऑनलाइन प्रदान करने के लिए प्रौद्योगिकी का उपयोग, सेवाओं की इलेक्ट्रॉनिक डिलीवरी के लिए ई-क्रांति,सूचना की पहुंच हर किसी तक पहुंचाने सभी के लिए सूचना, भारत में इलेक्ट्रॉनिक्स उद्योग को बढ़ावा देने के लिए इलेक्ट्रॉनिक्स विनिर्माण,नौकरियों के लिए आईटी उद्योग में रोजगार के अवसर पैदा करने के लिए सेवाओं को जल्दी अपनाने के लिए अर्ली हार्वेस्ट कार्यक्रम, इन घटकों के माध्यम से डिजिटल इंडिया अभियान भारत को डिजिटल रूप से सशक्त बनाने के लिए काम कर रहा है। भारतीय ज्ञान परंपरा एक बार पुनः भारत को विश्व का सिरमौर बनाएगी और भारत विश्व में तेजी से तरक्की करते हुए इस दिशा में आगे बढ़ चुका है।

वेब समीक्षा

आदित्य दुबे

(लेखक वेबसाइट ई-अंतर्भव में प्रबंध निदेशक है)

वरुण के कैरियर का पुनर्नियोजन करती सीरीज

फिल्म निर्माण में सफलता का पर्याय माने जाने वाली निर्देशक जोड़ी राज और डीके ने व्यावसायिक हितों के परिप्रेक्ष्य में बड़े परदे से दूरी बना ली है । राज और डीके इन दिनों बड़े परदे से हटकर कुछ नया और अनपेक्षित करने में जुटे हैं । पहले उन्होंने -'फैमिली मैन' में मनोज बाजपेयी को डिजिटल वर्ल्ड का स्टार बनाया फिर शाहिद कपूर की 'कबीर सिंह' वाली प्रसिद्धि के बूते अपनी वेब सीरीज 'फर्जी' में शाहिद को अलग पहचान दिलाई। अब राज और डीके वरुण धवन के एक्टिंग कैरियर को पुनर्नयोजित करने की कोशिश 'सिटाडेल हनी बनी' के माध्यम से कर रहे हैं। उनके ऐसे अनुप्रयोगों में नेटफ्लिक्स और प्राइम वीडियो दोनों उनकी सहायता कर रहे हैं। वस्तुतः कुछ हासिल करने के फेर में राज-डीके और यह दोनों प्लेटफार्म अन्योन्याश्रित हो गये हैं ।इस गठजोड़ को सीरीज दर सीरीज दर्शक भी व्यापक समर्थन दे रहे हैं ।

अभी तक आपने फिल्म अथवा वेबसिरीज़ के सीक्वल यानी विगत से आगे के संस्करण देखें हैं मगर इस बार राज-डीके के नई वेब सीरीज 'सिटाडेल हनी बनी' प्रियंका चोपड़ा की पिछले साल बनी वेब सीरीज 'सिटाडेल' से भी पहले की यानी बिफोर प्रीक्वल कहानी है ।इस सीरीज में प्रियंका की भूमिका नाडिया के बचपन की है। सामंथा और वरुण इस सिरीज़ में इन चरित्रों के माता-पिता हैं।इस वेब सीरीज की कहानी भी मूल 'सिटाडेल' की तरह दो कालखण्डों 1992 और 2000 में चलती है। 'सिटाडेल' तो आपको याद ही है कि 2023 और उसके आठ साल पहले की कहानी है। इन दोनों के बीच में एक कहानी 'सिटाडेल डायना' भी बीते महीने रिलीज हो चुकी है। दो ऐसी ही कहानियां अभी स्पैनिश और मैक्सिकन भाषा मेंआनी है। हॉलीवुड की दिग्गज कंपनी एमजीएम स्टूडियो खरीद चुका अमेजन अब खुलकर फिल्म

और वेब सिरीज निर्माण में उतर चुका है। पहली 'सिटाडेल' का बजट ही बताते हैं कोई ढाई हजार करोड़ रुपये रखा गया था। उस लिहाज से वेब सीरीज 'सिटाडेल हनी बनी' बहुत भव्य तो नहीं है लेकिन इसमें भी बजट अच्छा खासा लगा दिखता है।

खबर तो यह भी है कि राज और डीके व उनकी पुरानी लेखक मित्र सीता आर मेनन को रूसो ब्रदर्स मार्वल सिनेमैटिक यूनिवर्स का एक नया सुपरहीरो रचने हॉलीवुड ले जा रहे हैं। इस तिकड़ी में दम तो है, बस वे यदि घिसी-पिटी लीक पर चलने से परहेज़ करें तो वे कुछ कालजयी रच सकते हैं । इस दृष्टि से यह सिरीज़ उनके काम का पहली परीक्षा है और बहुत कमाल का काम भले तीनों ने यहां न किया हो लेकिन ये सिरीज़ कम से कम 'सिटाडेल' से थोड़ी बेहतर बन पड़ी है। सामंथा को ओटीटी के दीवाने इसके पहले 'फैमिली मैन' के सीजन 2 में देख चुके हैं। वेबसिरीज 'सिटाडेल हनी बनी' में वह स्कूल में पढ़ने वाली सात-आठ साल की बच्ची की माँ के भूमिका में हैं। बच्ची अपनी उम्र से ज्यादा होशियार है और हिंदी, तेलुगु, अंग्रेजी समेत चार भाषाएँ बोलती है।

वरुण धवन ने इस सिरीज़ से ओटीटी के क्षेत्र में कदम रखा है ।इस सिरीज़ की सबसे बड़ी खामी यह है कि सिरीज़ में कोई कुछ करके दिखाने से ज्यादा बोलकर पकाता है। अंकल वी, ऑपरेशन तलवार और डिवाइस जैसे नाम सुरेंद्र मोहन पाठक और वेद प्रकाश शर्मा के जासूसी उपन्यासों से उठाए गये लगते हैं। रूसो ब्रदर्स के स्पाईवर्स की यह तीसरी दुनिया है जो पहले की दोनों कहानियों से थोड़ा बेहतर है। हिंदी ओटीटी सिरीज में हीरोइन का कपड़े उतारना जरूरी नहीं है, ये प्राइम वीडियो को सामंथा ने अच्छे से समझाया है। सामंथा औरझ काशवी में मां-बेटी की केमिस्ट्री कमाल की है । सामांथा के आसपास ही सिरीज़ की कहानी बुनी गई है, फीयरलेस नाडिया की फिल्में पसन्द करने वाली हनी की बेटी के रोल में काशवी का काम जबर्दस्त है ।

नगर के खेल मैदान बना दिए गए मजाक..

नर्मदापुरम- संजीव डे राय

संभागीय मुख्यालय पर पुलिस परेड ग्राउंड को छोड़कर अब एक भी ऐसा व्यवस्थित मैदान नहीं बचा जिसे खेल के लिए उपयोग किया जा सके। नगर में खेल प्रतिभाओं को उभरने का मौका मिल पाना खत्म हो गया। जबकि खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए शिक्षक और खेल प्रेमी पहले जी जान लगा देते थे। कक्का जी के नाम से प्रसिद्ध पंडित रामलाल शर्मा की नजरें तो खिलाड़ियों को महाविद्यालय की ओर से टूर्नामेंट खिलाने के लिए हमेशा तलाशती थी। खेल प्रतिभाओं को उभारने के लिए उस दौर में कितना सम्मान और कितनी सुविधाएं उपलब्ध कराई जाती थी यह उस दौर अब बुजुर्ग हो चुके खिलाड़ियों से पता चलता है। लेकिन वो सब बातें कल की हो गई। शिक्षा के कुछ केंद्र छोड़कर तो शिक्षा केन्द्रों में मैदान तक उपलब्ध नहीं हैं जबकि बच्चों के शारीरिक विकास के लिए मैदानी खेल

कितने महत्वपूर्ण होते, किताबी ज्ञान तक सीमित रह गया। खेल और खेल मैदान दोनों उपेक्षित कर दिए गए। खेल और खेल मैदान जबकि नगर की शान कहलाते थे। ऐसा नहीं कि नगर में खेल मैदान नहीं एक से बढ़कर एक खेल मैदान और खेल प्रतिभाएं नगर में उपलब्ध है लेकिन जिम्मेदारों ने ही इन मैदानों को कमाई का साधन बना लिया या नवाचार के साधन.. ताज्जुब तो इस बात को लेकर किया जाना चाहिए कि खेल मैदानों को लेकर न तो प्रशासन को कोई फ्रिक है, न खेल प्रेमियों को, न जिला शिक्षा अधिकारी को फिर लिखने में गुरेज नहीं कि इस ओर सबसे ज्यादा गैर जिम्मेदारी के लिए विधायक जबावदार ठहराएं जा सकते हैं। जिन्होंने खेल और खेल प्रतिभाओं सहित खेल मैदानों को खत्म करने का बीड़ा उठा रखा। कुछ दिन पहले ही आध्या तिवारी टेनिस में खिताब लेकर नगर क्या आई उसके सम्मान और गाड़ी में बैठने फोटो सेशन सहित सब जुलूस की शक्ल में भीड़ बनने और बनाने को तैयार दिखाई दिए। ऐसा ही हर्षिता तोमर जब तैराकी मैडल हासिल कर नगर आई उसे भी हाथों-हाथ लेने के लिए लोग रेलवे स्टेशन पहुंच गए। आखिर इन दोनों खिलाड़ियों से किसी ने नहीं पूछा इस मुकाम तक पहुंचने में नगर और नगरवासियों का कितना सहयोग पाया..? आध्या जिस टेनिस मैदान पर प्रेक्टिस करती थी आज वह जरजर हो गया पिता ने अपना केरियर छोड़कर मुकाम पर पहुंचाया नगर को गर्व है लेकिन नगरवासियों सहित जिम्मेदारों का इसमें कितना योगदान.? हर्षिता तोमर के मामले में भी उसके माता-पिता की भूमिका अहम है। पहले यहां खेलों के कल्ब हुआ करते थे और अब अकादमी.. आखिर खेल और खेल प्रतिभाओं सहित खेल मैदानों की इतनी उपेक्षा क्यों.? हर स्कूल खेल फीस पालक से तो वसूलते हैं और नियमानुसार शिक्षा विभाग इस फीस का हिस्सा.. फिर खेल मैदान, खेल प्रतिभाओं सहित खेल के प्रति इतनी अरुचि क्यों। नगरपालिका ने गुप्ता ग्राउंड की चारों तरफ दुकान बना डाली और मैदान को किराए पर देकर खिलाड़ियों को खदेड़ दिया। एस एन जी स्टेडियम सरकारी है कलेक्टर ने उसे नवाचार का मैदान और नर्मदा शिक्षा समिति ने लावारिस बना दिया उधर गवर्नमेंट स्कूल के खेल मैदान पर अधूरा होस्टल बनाकर मैदान कबाड़ कर दिया ऐसा क्यों..?

अपराधियों में दिखने लगा पुलिस का खौफ

देवास/मोहन वर्मा। देवास में पुलिस अधीक्षक के पद पर बड़वानी से ट्रांसफर हो कर आए श्री पुनीत गहलोद ने ज्वाइन करने के एक माह के भीतर ही अपनी कार्यशैली से अपनी एक विशिष्ट पहचान बना ली है। रोजाना लंबित मामलों की तह तक पहुंचकर अपराधियों को धरदबोचने के साथ ही जुए और सट्टे के उन अड्डों पर दबिश की उनकी कार्यवाही को आम जन की सराहना मिल रही है जहाँ अब तक राजनैतिक दबावों के चलते पुलिस खुद कार्यवाही करने में हिचकिचाती थी।

पुलिस अधीक्षक गहलोद ने अपनी आक्रामक पाली की शुरुआत में ही अपराधियों को अवगत करवा दिया कि कोई भी अपराध करने के पहले वे दस बार सोच लें। जिले के अलग अलग जगहों से ग़ायब हुई नाबालिक बालिकाओं को ढूंढने की कार्यवाही हो, या सोशल मीडिया और साइबर के जरिए ठगी के शिकार हुए लोगों की धन वापसी, राजनैतिक संरक्षण में अब तक चलते बेखौफ चलते जुए और सट्टे के अड्डे हों या कोई और अपराध । इन और इन जैसे दूसरे छोटे बड़े सभी मामलों में त्वरित कार्यवाही से एक तरफ जहां अपराधियों में हड़कंप मचा है वहीं आम जन में एक बार फिर पुलिस को लेकर विश्वास जगा है। पिछले सप्ताह से फिर शुरू हुई पुलिस जनसुनवाई में भी पुलिस कप्तान ने थानों पर प्राप्त शिकायतों पर अगली जनसुनवाई तक प्रतिवेदन, निराकरण के आदेश जारी किये हैं, साथ ही अब पुलिस द्वारा की जाने वाली कार्यवाही की लगातार सूचना भी प्रेस वार्ता का इंतजार किए बगैर मीडिया के माध्यम से लोगों तक पहुँच रही है। हालांकि अभी भी पोस्ट ऑफिस कर्मचारी से लूट और ऐसे ही कुछ बड़े मामले अनसुलझे है। साथ ही शहर के कई हिस्से नशे के अड्डों के रूप में पहचाने जाते हैं।

साढ़े बारह गांव की बदली हुई तस्वीर का श्रेय पटवा परिवार को

साढ़े बारह गांव क्षेत्र में पटवा आरोग्य शिविर का हुआ आयोजन

- **मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल सहित पूर्व मंत्री डॉ. प्रभुराम चौधरी हुए शामिल**

सुल्तानपुर। सन् 1985 से साढ़े बारह गांव क्षेत्र में विकास का जो क्रम शुरू हुआ वो आज तक कायम है यहां अब सड़क, पानी, बिजली, स्कूल सब सुविधाएं ग्रामीणों को मिल रही हैं। एक दौर था जब इसे सबसे पिछड़े इलाके के रूप में पहचाना जाता था लेकिन अब यहां की तस्वीर बदल चुकी है। पद्म विभूषण पूर्व मुख्यमंत्री स्व सुंदरलाल पटवा ने पहले विधायक फिर मुख्यमंत्री रहते इस क्षेत्र में विकास कार्य की जो नींव रखी उसे पूर्ण विकसित क्षेत्र बनाने तक का कार्य पूर्व मंत्री क्षेत्रीय विधायक सुरेंद्र पटवा ने किया है। सही मायने में इस क्षेत्र की बदली हुई तस्वीर का श्रेय पटवा परिवार को जाता है। उक्त उदगार शनिवार को साढ़े बारह गांव में आयोजित पटवा आरोग्य शिविर में स्वास्थ्य राज्य मंत्री नरेंद्र शिवाजी पटेल के रहे। उन्होंने अपने संबोधन में कहा कि पूर्व मुख्यमंत्री स्व सुंदरलाल पटवा ने प्रदेश के विकास, संगठन के विस्तार एवं कार्यकर्ताओं के विश्वास के प्रतीक के रूप में अपना जीवन समर्पित किया। वे विलक्षण राजनेता एवं जनसेवक के रूप में वे प्रदेशवासियों के हृदय में स्मरणीय रहेंगे। इस अवसर पर पूर्व मंत्री भोजपुर विधायक सुरेंद्र पटवा, पूर्व मंत्री सांची विधायक डॉ प्रभुराम चौधरी, भाजपा जिलाध्यक्ष राकेश शर्मा सहित बड़ी संख्या में जनप्रतिनिधि, भाजपा नेता एवं कार्यकर्ता एवं ग्रामीण मौजूद थे।

पूर्व मंत्री डॉ प्रभुराम चौधरी ने अपने संबोधन में स्व पटवा को नमन करते हुए कहा कि संगठन के विस्तार और कार्यकर्ताओं को गढ़ने में पटवा जी का अहम भूमिका रही। उनका व्यक्तित्व और कृतित्व हम सभी के लिए प्रेरणादायी है। उन्होंने क्षेत्र में विकास का जो क्रम शुरू किया वो आज भाई सुरेंद्र पटवा के नेतृत्व में बरकरार है। इस अवसर पर विधायक सुरेंद्र पटवा ने कहा कि बड़े साहब हमेशा चाहते थे इस क्षेत्र का संपूर्ण विकास हो आज यहां आकर लगता है जैसे उनका सपना पूरा हो गया हो। उन्होंने कहा कि मुख्यमंत्री डॉ मोहन यादव के नेतृत्व में प्रदेश का चहुमुंखी विकास हो रहा है इसी क्रम में भोजपुर क्षेत्र में लगातार विकास कार्य हो रहे हैं।

इस अवसर पर पीपुल्स हॉस्पिटल भोपाल की टीम द्वारा ग्रामीणों के स्वास्थ्य की जांच की गई एवं उन्हें उचित इलाज के लिए मार्गदर्शन व दवाइयों का वितरण भी किया गया।

पद्म विभूषण स्व सुंदरलाल पटवा के जन्मशताब्दी वर्ष में जन्म जयंती से कार्यक्रम प्रारंभ हुए हैं। एक माह तक लगातार विभिन्न आयोजन होंगे। इस दौरान पटवा आरोग्य स्वास्थ्य शिविर का आयोजन किया जाएगा जिसके अंतर्गत 20 नवम्बर को औबेदुल्लागंज, 23 नवम्बर को चिकलोद, 25 नवम्बर की सुल्तानपुर, 27 नवम्बर को बाड़ी, 28 नवंबर को उमरावगंज, 5-6 दिसंबर कुकडेश्वर, मनासा में शिविर का आयोजन होगा। इस एक माह में विभिन्न प्रतियोगिताएं भी आयोजित की जाएंगी जिसमें 23 नवम्बर को मंडीदीप में शतरंज प्रतियोगिता का शुभारंभ, 24 नवंबर मंडीदीप में शतरंज प्रतियोगिता का समापन। 25 नवम्बर को दीवाटिया स्टेडियम में क्रिकेट टूर्नामेंट संपन्न होगा।

मरीजों को उपचार कराने जाना पड़ रहा जिला अस्पताल

संजीवनी क्लीनिक तैयार, लेकिन डॉक्टर-स्टाफ का टोटा

संजय द्विवेदी, बैतूल। शहर में संजीवनी क्लिनिक भवन बनकर तैयार हो गए हैं, लेकिन सिर्फ गांधी वार्ड कमानी गेट के पास का क्लिनिक शुरू हो पाया है, वहां भी पर्याप्त स्टाफ और संसाधन उपलब्ध नहीं है। डॉक्टर के अभाव में सपोर्टिंग स्टाफ दवाएं बांटने का काम कर रहा है। हमलापुर मांझी नगर में बनकर तैयार क्लिनिक को नगरपालिका, स्वास्थ्य विभाग के हैंडओवर करने की तैयार कर रही है। इधर टिकारी रोड पर मलेरिया ऑफिस के पीछे दो संजीवनी क्लिनिक बनाये गये है। नपा ने इन क्लीनिकों को स्वास्थ्य विभाग के हैंडओवर भी कर दिया है, लेकिन स्टॉफ के अभाव सामान्य संक्रामक रोगों का इलाज के साथ-साथ पैथोलॉजी में जांच की जानी है। इसके लिए डॉक्टर, नर्सिंग स्टाफ, कंपाउंडर और लैब टेक्नीशियन होना अनिवार्य है। क्लिनिकों में जांच के लिए ओपीडी काउंटर और पैथोलॉजी लैब भी तैयार की है। क्लिनिक पर ही जरूरत की दवाइयां मरीजों को वितरित करने के लिए फार्मासिस्ट की नियुक्ति भी जरूरी है। लेकिन जिलेभर में पहले से डॉक्टर और स्टाफ की कमी है। जिला अस्पताल से लेकर सामुदायिक और प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों में डॉक्टर कम है। ऐसे में शहरी क्षेत्र में संजीवनी क्लिनिक पर स्टाफ की व्यवस्था करना स्वास्थ्य विभाग के लिए सबसे बड़ी चुनौती

में यह क्लिनिक शुरू नहीं हो पाये है। संजीवनी क्लीनिक शुरू करने का सीधा उद्देश्य लोगों को अपने घर के पास ही स्वास्थ्य सुविधाएं उपलब्ध कराना है, लेकिन संजीवनी क्लिनिकों के संचालन में हो रही देरी से लोगों को छोटी-मोटी बीमारी के लिए भी जिला अस्पताल जाना पड़ता है। संजीवनी क्लिनिक में जब तक स्टाफ और सुविधाएं नहीं होती, ये भवन किसी काम के नहीं हैं।

करीब दो साल पहले शुरू हुई थी प्रक्रिया- संजीवनी क्लिनिक की स्वीकृति मिलने के बाद वर्ष 2022 में भवन निर्माण को लेकर कवायद शुरू की गई थी। क्लिनिक के भवन बनाने की जिम्मेदारी प्रदेश सरकार ने नगरीय आवास एवं विकास विभाग को दी। नगरीय क्षेत्रों में नगर पालिका को निर्माण एजेंसी बनाया गया। इसी के तहत शहर में संजीवनी क्लिनिक क्लीनिक खोलने के लिए जगह चिन्हित की गई। इसके बाद टेंडर प्रक्रिया कर भवन बनाए गए। भवन बनने के बाद नगरपालिका ने स्वास्थ्य विभाग को हैंडओवर कर दिये, अब संजीवनी क्लिनिकों के संचालन की जिम्मेदारी स्वास्थ्य विभाग की है, किन्तु स्टाफ नहीं होने से स्वास्थ्य विभाग भी संजीवनी क्लीनिक का संचालन नहीं कर पा रहा है। हालात यह है कि टिकारी के संजीवनी क्लिनिक पर ताला लगा हुआ है।

संजीवनी क्लिनिक पर इन रोगों का होना है उपचार- संजीवनी क्लिनिक पर सर्दी, खांसी, बुखार, प्रसव पूर्व जांच, परिवार कल्याण सेवाएं, टीकाकरण, किशोर स्वास्थ्य, बुजुर्गों की जांच, बाल रोग, मधुमेह, रक्तचाप और बन गई है।

कम नहीं हो रहा जिला अस्पताल पर मरीजों का बोझ- संजीवनी क्लिनिक खोले जाने का मकसद यह था कि लोगों को अपने घर के आसपास ही स्वास्थ्य सुविधाएं मिल सकेगी और जिला अस्पताल में मरीजों का बोझ कम होगा, लेकिन क्लीनिकों के संचालन में देरी से जिला अस्पताल में मरीजों का बोझ बढ़ता जा रहा है। जिला अस्पताल की ओपीडी में हर दिन 600-800 के आसपास मरीज आते हैं। हर दिन आने वाली ओपीडी में 50 प्रतिशत मरीज सामान्य बीमारियों से पीड़ित होते हैं। जानकार बताते है कि संजीवनी क्लीनिकों में संविदा के आधार पर डॉक्टर की नियुक्ति किए जाने का नियम हैं। बताया गया कि डॉक्टरों का वेतनमान कम होने से कोई आना नहीं चाह रहा है। जिला अस्पताल में भी मरीजों की तुलना में डॉक्टरों की संख्या कम हैं। ऐसे में अस्पताल की व्यवस्थाएं भी गड़बड़ा रही है।

इनका कहना है -

संजीवनी क्लीनिक में डॉक्टर और स्टाफ की पदस्थापना के लिए स्वास्थ्य संचालनालय को पत्र लिखा है। जैसे ही डॉक्टर और स्टॉप मिलता है, संजीवनी क्लिनिक का संचालन शुरू कर दिया जायेगा। फिलहाल गांधी वार्ड के क्लीनिक का संचालन के लिए डॉक्टर पदस्थ हैं।

- डॉ रविकांत उईके,
सीएमएचओ, स्वास्थ्य विभाग बैतूल

देवकरण डहरिया को सारणी थाने भेजा

अब कोतवाली की कमान संभालेंगे रविकांत डेहरिया

बैतूल। जिला पुलिस अधीक्षक बैतूल ने कानून व्यवस्था को लेकर जिले के थाना प्रभारियों की पदस्थापना स्थल में बदलाव किया है। जिसमें कोतवाली, गंज, सारणी, सांईखेड़ा और शाहपुर थाने शामिल है। इन थाने के प्रभारियों को एक थाने से दूसरे थाना भेजे जाने के निर्देश जारी हो चुके है। अचानक हुए इस बदलाव को लेकर विभागीय अधिकारी इसे प्रशासनिक कसावट और परिवर्तन का हवाला दे रहे है। प्राप्त जानकारी के अनुसार पुलिस अधीक्षक निश्चल एन झारिया ने बैतूल कोतवाली प्रभारी देवकरण डेहरिया का स्थानांतरण सारणी कर दिया है,

वहीं अब गंज थाना प्रभारी रविकांत डेहरिया को कोतवाली प्रभारी बनाया गया है। सारणी थाना प्रभारी अरविंद कुमरे को गंज थाना प्रभारी बनाया गया है। वैसे चर्चा यह भी है कि शहर के कोतवाली थाना और सारणी क्षेत्र में जिस तरह से अचानक क्राइम बढ़ा है, उसको लेकर विधायक हेमंत खंडेलवाल, आमला विधायक डॉ. योगेश पंडाग्रे इन थाना प्रभारियों की कार्यप्रणाली से खासे नाराज बताए जा रहे थे। हालांकि एसपी ने इस तथ्य को खारिज करते हुए इसे प्रशासनिक व्यवस्था ही करार दिया है।

अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस का आयोजन आज

पीड़ित पुरुषों को दी जाएगी मानसिक और कानूनी सहायता

बैतूल। अंतर्राष्ट्रीय पुरुष दिवस के अवसर पर एसआईएफ बैतूल द्वारा 17 नवंबर 2024 को होटल आईसीइन में एक विशेष कार्यक्रम आयोजित किया जाएगा। यह कार्यक्रम सुबह 11 बजे से दोपहर 1 बजे तक चलेगा। एसआईएफ बैतूल के प्रभारी डॉ. संदीप गोहे ने बताया कि लगातार तीसरे वर्ष आयोजित हो रहे इस कार्यक्रम का उद्देश्य समाज में पुरुषों के योगदान को मान्यता देना और झूठे मामलों में फंसे पुरुषों और उनके परिवारों को मानसिक व कानूनी सहायता प्रदान करना है। एसआईएफ एक समर्पित एनजीओ है, जो उन पुरुषों की सहायता करता है जो झूठे आरोपों का सामना कर रहे हैं। कार्यक्रम के मुख्य आकर्षण में मानसिक स्वास्थ्य और कानूनी उपायों पर विशेषज्ञों द्वारा चर्चा शामिल है। विशेषज्ञ झूठे आरोपों के प्रभाव, उनसे निपटने के तरीके, और कानूनी सहायता के विकल्पों पर जानकारी साझा करेंगे। इसके साथ ही, पीड़ित पुरुषों और उनके परिवारों की कहानियां और अनुभव भी प्रस्तुत किए जाएंगे, जिससे समाज में जागरूकता बढ़ेगी। कार्यक्रम के दौरान डॉ. संदीप गोहे झूठे आरोपों से जूझ रहे पुरुषों और उनके परिवारों की मदद के लिए एनजीओ की सेवाओं और उद्देश्य पर प्रकाश डालेंगे। एसआईएफ बिना किसी शुल्क के पीड़ितों को मानसिक और कानूनी सहायता प्रदान करता है।

श्रद्धांजलि सभा में वक्ताओं ने कहा बुन्देली कवि पंडित राजेन्द्र सहारिया का निधन क्षेत्र की अपूरणीय क्षति

सुबह सवेरे सोहागपुर

स्थानीय गांधी चौक में पलकमती साहित्य परिषद के तत्वावधान में विख्यात बुन्देली कवि पंडित राजेन्द्र सहारिया के आकस्मिक निधन के उपरांत श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया।इस अवसर पर पंडित नीलेश जैन, पंडित कैलाश परसाई, वरिष्ठ वकील चौधरी माधवसिंह, जनपद पंचायत अध्यक्ष जालमसिंह पटैल, पूर्व नपाध्यक्ष राजेन्द्रसिंह चौधरी, कन्नूलाल अग्रवाल, डाक्टर सोमेश सिटोके, श्री तिवारी, पलकमती साहित्य परिषद अध्यक्ष प्रबुद्ध दुबे,राजेश शुक्ला के अलावा स्वगीर्य सहारिया जी के अनुज अरविंद सहारिया, स्वगीर्य सहारिया जी के सुपुत्र पदम सहारिया आदि गणमान्य नागरिक मंचासीन थे। इस श्रद्धांजलि सभा में उनके मित्रों, पलकमती साहित्य परिषद के साथियों, जनप्रतिनिधियों, अधिवक्ता गणों कवि शैलेन्द्र शर्मा,कवि जीवन जी, वरिष्ठ पार्षद जमील खान, विवेकानंद पब्लिक स्कूल के संचालक अनिल गहैरेया, अखिलेश चौरसिया, ज्ञानी सुरजीतसिंह, वकील मंगलसिंह रघुवंशी, अधिवक्ता राजीव शुक्ला, डाक्टर सोमेश सिटोके, ब्लाक भाजपा अध्यक्ष एवं जनपद पंचायत उपाध्यक्ष राघवेंद्र सिंह पटेल, वकील जेपी माहेश्वरी, सहपाठी केएल ब्रहमवशी, आनंद दुबे, पूर्व अधिवक्ता संघ अध्यक्ष बी. के. शर्मा, कांग्रेस नेता पुष्पराजसिंह पटेल, पूर्व नपाध्यक्ष अभिलाष सिंह चंदेल, पंडित नीलेश जैन, पंडित कैलाश परसाई, जनपद अध्यक्ष जालमसिंह पटैल, समाजसेवी कन्नूलाल अग्रवाल, वरिष्ठ अधिवक्ता चौधरी माधवसिंह, विधायक विजयपालसिंह आदि श्रद्धांजलि सभा में स्वगीर्य राजेन्द्र सहारिया के व्यक्तित्व,कवि, साहित्यकार, मिलनसारिता, आदि पर अपनी अपनी बात रखी। कई वक्ताओं ने उनके घर घर कविता पाठ की निरंतर बनाए रखने पर जोर दिया। डाक्टर सोमेश सिटोके अपनी बात रखने पर अपने आंसूओं रोक नहीं पाए। संचालन कर रहे संजीव शुक्ला ने स्वगीर्य राजेन्द्र सहारिया के निधन के एक दिन पूर्व करेली में उनके नागरिक अभिनंदन पर बात रखी। वरिष्ठ वकील चौधरी माधवसिंह ने श्रीमद्भगवद्गीता के प्रसंगों को उद्धृत किया।

इस अवसर बालपुरी गोस्वामी, पूर्व व्यापारी संघ अध्यक्ष मुकेश मालवीय, वरिष्ठ कवि शरद व्यास भोपाल, कवि सौरभ सोनी, पार्षद गौरव पालीवाल, पार्षद आशीष विश्वकर्मा, इन्दु दीवान, कवि स्वेतल दुबे ,निपुण खंडेलवाल सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसी अवसर पर दो मिनिट का मौन रखकर श्रद्धांजलि अर्पित की गई। अंत उपस्थित जनों स्वगीर्य राजेन्द्र सहारिया जी के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित की।

अवल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे एक नूर ते सब जग उजियारा कौन भले को मंदे : ज्ञानी सुरजीतसिंह

हीरालाल गोलानी सोहागपुर।

अवल अल्लाह नूर उपाया कुदरत के सब बंदे एक नूर ते सब जग उजियारा कौन भले को मंदे, अर्थात हम सब एक परमात्मा की संतान हैं उक्त वचन प्राचीन गुरू नानक दरबार मुख्य बाजार स्थित गुरुद्वारा में ज्ञानी सुरजीतसिंह ने कहें। आपने आगे प्रातः पाठ साहब की समाप्ति के अवसर पर गुरु नानक देव जी के शब्द कीर्तन उपदेश सुनाते कहा कि 'जिथे बाबा पर धरे पूजा आसान थापन सोआ।' ये बनी में बताया गया कि जहां जहां परमात्मा के चरणों की धूल है वो जगह पवित्र हो जाती है। आपने सतगुरु की वाणी का वर्णन करते हुए कहा कि 'किसी को तकलीफ देकर मुझसे अपनी खुशी दुआ मत करना, लेकिन अगर किसी को एक पल की भी खुशी देते हो तो अपनी तकलीफ की फ्रिक मत करना'। आपने अंत में कहा 'नानक नाम जहाज है, चढ़े सो उतरे पार'।

उल्लेखनीय है कि सोहागपुर की पावन भूमि में दो बार गुरू नानक देव जी का आगमन रेवा बनखेड़ी मार्ग पर स्थित टेकरी पर हुआ था। इस पवित्र गुरू नानक टेकरी पर गुरु नानक पब्लिक स्कूल स्थापित है। यहां पिपरिया गुरूसिंह सभा इस पवित्र भूमि

की देखरेख भाल करती है। वहीं धार्मिक आयोजन करके लंगर का भी आयोजन होता है। गुरु नानक दरबार में गुरु नानक देव जी का 556 वां प्रकाश पूरब धूमधाम से मनाया गया। इस अवसर पर प्रतिपाल सिंह खनूजा, पिंकी वैध सहित कई गणमान्य नागरिक उपस्थित थे। इसी क्रम में स्टेशन रोड स्थित गुरु मंदिर एवं भाई ताराचंद करतारी में गुरू नानकदेव जी की जयंती हर्षोल्लास के साथ मनाई गई। भाई ताराचंद करतारी ने विशेष पूजा-अर्चना करके अरदास की।इस अवसर पर सिन्धी समाज के सजातीय बन्धु, महिलाएं, बच्चे उपस्थित थे। प्रसाद वितरण के उपरांत देना गार्डन में लंगर का आयोजन किया गया था। सजातीय बन्धुओं ने अपने प्रतिष्ठान बंद रखे थे। शाम 7 बजे देवना गार्डन में विगत दिनों से चल रही प्रतियोगिता के प्रतिभागियों के अलावा छात्र ,छात्राओं को विधायक विजयपालसिंह के आतिथ्य में स्मृति चिन्ह प्रदान किए गए। इसी अवसर पर व्यंजनों के स्टाल लगाए गए थे। जिनके कूपन का मूल्य मात्र दस रूपए था। इस अवसर पर समाजिक बन्धुओं ने अपनी उपस्थिति दर्ज कराई।

'एतराज' के सीक्वल की तैयारी पुरानी जोड़ी पर सवाल

फिलकुछ समय पहले अक्षय कुमार को सुनील शेट्टी और परेश रावल के साथ देखा गया था। इन तीनों स्टार्स के साथ आते ही फिल्म 'हेरा फेरी 3' को लेकर कयास लगाए जाने लगे। लोग कहने लगे थे कि इन तीनों को एक बार फिर से साथ काम करना चाहिए। इस बीच अक्षय कुमार की एक और फिल्म के सीक्वल के बारे में चर्चा तेज हो गई। किसी जमाने में इस फिल्म में अक्षय कुमार ने प्रियंका चोपड़ा के साथ काम किया था।

2004 में आई फिल्म 'एतराज' के बारे में जानकारी मिली कि इसके सीक्वल पर काम शुरू हो गया है। इसका खुलासा खुद सुभाष घई ने किया। इस फिल्म के सीक्वल के बारे में सुभाष घई ने कहा कि 'ओएमजी 2' के राइटर और डायरेक्टर अमित राय के पास एक शानदार कहानी है। अब वे 'एतराज 2' के लेखक बन चुके हैं। हमने कई बार इस पर बात की है। अब

हम इस फिल्म को बनाने के लिए पूरी तरह से तैयार हैं। मैं बस इतना बता सकता हूं कि अमित के पास एक हिट स्क्रिप्ट है और मुझे फिल्म की यह कहानी बहुत पसंद आई।

हालांकि, सुभाष घई ने इस बात का खुलासा नहीं किया कि 'एतराज' के सीक्वल में अक्षय कुमार और प्रियंका चोपड़ा की जोड़ी नजर आएंगे या नहीं!

इस फिल्म में अक्षय कुमार ने करीना कपूर और प्रियंका चोपड़ा के साथ रोमांस करके हंगामा खड़ा कर दिया था। फिल्म में प्रियंका चोपड़ा ने निगेटिव किरदार निभाया था। प्रियंका चोपड़ा ने भी खुलासा किया था कि फिल्म की शूटिंग के दौरान वो कई बार घर पर भी अपने किरदार की तरह ही हरकतें करती थीं।

रियल बॉक्स

'बिग बॉस' में अब मनोरंजन नहीं बचा!

हेमंत पाल

लेखक 'सुबह सवेरे' इंदौर के स्थानीय संपादक हैं।

कुछ दशक पहले तक टीवी पर मनोरंजन के नाम पर खास कुछ नहीं था। जो था, दर्शक उसी में मन बहलाव की सामग्री ढूंढ लेते थे। पारिवारिक या पौराणिक सीरियल, समाचार, फ़िल्मी गीतों का साप्ताहिक कार्यक्रम और हर रविवार को एक फिल्म ही मनोरंजन हुआ करता था। फिर भी लोग मनोरंजन की खुराक से संतुष्ट थे। आज चौबीस घंटे टीवी मनोरंजन परोसता है, पर दर्शक तृप्त नहीं होते। एक दौर रियलिटी शो का आया, जिसने मनोरंजन की अलग खुराक परोसी। अमिताभ बच्चन के शो 'कौन बनेगा करोड़पति' ने सन 2000 में दर्शकों को मनोरंजन के साथ ज्ञान से परिचित कराया। इसी समय 'बिग बॉस' नाम का रियलिटी शो भी टीवी के परदे पर आया। मूलतः नीदरलैंड के इस शो का नाम 'बिग ब्रदर' है। इस रियलिटी शो में सेलिब्रिटी को कंटेस्टेंट बनाया जाता है। इंडिया में सेलिब्रिटी का मतलब फिल्म और टीवी के कलाकार होते हैं, इसलिए यहाँ वे ही इस शो के प्रतियोगी बनते रहे। पिछले 17 सीजन में इस शो को 6 एंकर्स ने संचालित किया। इनमें सलमान खान का लम्बे समय से कब्ज़ा बना है।

अभी तक माना जाता था कि जब 'बिग बॉस' सीजन शुरू होता है, वह हमेशा टीवी पर लोकप्रियता में नंबर वन पर रहता है! लेकिन, लगता है इस बार दर्शकों को शो पसंद नहीं आ रहा। ये सिर्फ अनुमान नहीं, सच्चाई है, जिसका सबूत टीवी कार्यक्रमों को उनकी लोकप्रियता के आधार पर नंबर देने वाली 'टीआरपी' ने भी दिया। 'टीआरपी' में अव्वल रहने के लिए सभी टीवी शो में मुकाबला चलता रहता है। क्योंकि, ये सिर्फ लोकप्रियता का प्रमाण नहीं, बल्कि प्रायोजक भी चाहते हैं कि उनका शो सबसे आगे रहे! यदि ऐसा नहीं होता, तो प्रायोजकों के दरकने का खतरा बढ़ जाता है। इस कोशिश में सलमान खान का शो 'बिग बॉस' कम से कम इस बार तो बुरी तरह असफल साबित हुआ। शो को अभी दो महीने भी नहीं हुए हुए, पर इसकी 'टीआरपी' बेहद कम है। जानकारी के मुताबिक, यह 18वां सीजन 18वें नंबर पर है। दर्शकों के नजरिए से भी इस बार शो का हाल बहुत बुरा है।

शुरुआती लोकप्रियता के बाद 'बिग बॉस' जैसे शो दर्शकों के दिमाग से उतरता गया। इसका कारण है शो की छद्म सच्चाई! भले ही शो को रियलिटी का नाम दिया गया हो, पर कई घटनाएं ऐसी होती है, जिनसे इसके रियल होने पर संदेह होता है। प्रतियोगियों की नजर आती कुंठा, रोज के झगड़े और विवाद, एक-दूसरे को मात देने की कोशिश और गुटबाजी ये सब अपने आप होता नहीं लगता। इसके पीछे कहीं न कहीं स्क्रिप्ट होने का संदेह होता है। वो लिखित में भले न हो, पर दर्शकों को मनोरंजन परोसने के लिए उसे तैयार तो किया ही जाता होगा। शो से जुड़े ऐसे कई सवाल हैं, जो इसके रियल होने पर संदेह जताते हैं। क्या सेलिब्रिटी छोटी-छोटी बातों पर ऐसे झगड़ते है? क्या 'बिग बॉस' में दिखाई जानी वाली प्रेम कहानियां सच्ची होती हैं? प्रतियोगी बनकर आए सेलिब्रिटी 'बिग बॉस' की आवाज़ सुनकर डर क्यों जाते हैं? दरअसल, इस शो का कॉन्सेप्ट शो में शामिल सेलिब्रिटी की रियल-लाइफ को दर्शकों के सामने लाना है! क्योंकि, तीन महीने तक कोई भी अपने मूल चरित्र को छुपाकर नहीं रख सकता और न एक्टिंग कर सकता है! इस आधार पर कहा जाता है कि 'बिग बॉस'

में दर्शक वही देखते हैं, जो वास्तव में कैमरों के सामने घटता है! अभी तक यही समझा भी जा रहा था। लेकिन, क्या वास्तव में यही सच है? अनजान चेहरों को सेलिब्रिटी भी तो नहीं माना जा सकता।

इस शो का जादू दर्शकों के दिमाग से इसलिए भी उतरता गया कि घर के 15 लोगों को आदेश देने वाली आवाज 'बिग बॉस' ने अपना खुद ही अपना दबदबा खत्म कर लिया। पिछले 3-4 सीजन से तो 'बिग बॉस' के निर्देशों का कोई मतलब ही नहीं रह गया। जबकि, पहले प्रतियोगी यह आवाज सुनते ही सहम जाते थे। दिन में कोई सोता नहीं था, यदि सोता पाया जाता तो उसे सजा मिलती थी। घर में अंग्रेजी बोलने पर पाबंदी थी। यदि कोई झगड़ता तो 'बिग बॉस' की एक आवाज पर बोलती बंद हो जाती थी। पर, अब ऐसा कुछ दिखाई नहीं दे रहा। 'बिग बॉस' के 18वें सीजन तक आते-आते 'बिग बॉस' का दबदबा नहीं बचा और उसका मसखरापन सामने आने लगा। महिला प्रतियोगियों से रंगीली बातें करना, बेवजह की मजाक और विवाद होने पर भी कुछ नहीं बोलना दर्शकों के गले नहीं उतर रहा।

घर में मौजूद प्रतियोगियों ने 'बिग बॉस' को गंभीरता से लेना लगता है बंद ही कर दिया। 18वें सीजन की टीआरपी का लगातार गिरना सबूत है। घर में लाए गए प्रतियोगी अनजान चेहरे हैं, सीरियल के दोयम दर्जे कलाकार हैं या जेल काटकर आए आपराधिक प्रवृत्ति के लोग हैं, जो झगड़ों में बाहर देख लेने की धमकी देने से भी बाज नहीं आते! जब किसी शो का स्तर इतना दोयम दर्जे का हो तो कोई उसे क्यों देखे! 'बिग बॉस' पिछले कुछ सालों में बेहद कमजोर नजर आने लगा। इस बार का शो (बिग बॉस-18) सबसे ज्यादा अपरिपक्व और बिखरा नजर आ रहा। इस शो की लोकप्रियता भी तेजी से घटी। इसका कारण शो के कंटेस्टेंट्स को माना जा रहा है, जो ज्यादातर अनजाने चेहरे हैं। दर्शकों के लिए इस शो का आकर्षण होता है, अपने पसंदीदा चेहरों को नजदीक से जानना और उनकी दिनचर्या और उनकी आदतों से वाकिफ होना! लेकिन, जिन चेहरों को कंटेस्टेंट बनाकर घर में लाया गया, वे दर्शकों के बीच पहचाने हुए नहीं है!

'बिग बॉस' कई बार अपने विवादास्पद फॉर्मेट के कारण आलोचना का शिकार बना! एक सीजन में आलोचना का कारण था, पुरुष और महिला प्रतियोगियों को एक बिस्तर पर साथ सोने की अनिवार्यता! लेकिन, दर्शकों की नाराजगी के बाद इसे दो दिन बाद ही बदलना पड़ा। इस बहाने 'बिग बॉस' लोगों के निशाने पर आ गया! सोशल मीडिया पर दर्शकों का गुस्सा फट पड़ा! उन्होंने अपनी नाराजी जताते हुए सूचना प्रसारण मंत्रालय से 'बिग बॉस' को बंद करने तक की मांग कर दी थी! मेकर्स पर यह भी आरोप लगाया गया कि वे भारतीय संस्कृति का अपमान कर रहे हैं। कई समाजसेवी संगठनों ने 'बिग बॉस' के फॉर्मेट को गलत बताते हुए सूचना प्रसारण मंत्रालय को पत्र लिखा! जिसे गंभीरता से लिया और जांच के आदेश भी दिए गए थे! विवाद बढ़ने के बाद शो के मेकर्स ने इस नियम को बदल तो दिया था।

पिछले 18 सीजन के दौरान कई प्रतियोगियों को एक-दूसरे से प्यार हो जाता है। शो की रोचकता के लिए 'बिग बॉस' उन प्रेमियों की शादी करवा देते हैं। ऐसे दो प्रसंग अभी तक हुए हैं। लेकिन, वास्तव में ये दिखावा ही था। शो में सारा खान और अली मर्चेंट की शादी हुई थी। 'बिग बॉस' सीजन-4 में आने से पहले दोनों एक-दूसरे को डेट कर रहे थे। जब शो में अली मर्चेंट ने सारा खान को प्रपोज किया, तो दोनों ने शादी करने का फैसला किया और इसके बाद शो में ही दोनों की शादी करवाई गई। इस शादी में उनके माता-पिता को भी बुलाया गया था। इस शादी के बाद बिग बॉस की टीआरपी काफी बढ़ी, पर शादी आगे नहीं चली। शादी के दो महीने बाद यह जोड़ी अलग हो गई। दरअसल, ये सब शो की टीआरपी के लिए किया गया था। इसके बाद सीजन-10 में भोजपुरी फिल्म इंडस्ट्री की एक्ट्रेस मोनालिसा ने शो की कंटेस्टेंट रहते हुए भोजपुरी एक्टर के मशहूर स्टार विक्रांत सिंह राजपूत से शादी की। शादी में मोनालिसा की मां और विक्रांत की बहन भी शामिल हुई।

- hemantpal60@gmail.com/ 9755499919

फुलझड़ी के पैकेट पर अनन्या का फोटो

अनन्या पांडे इन दिनों सुर्खियों में हैं। अपने बर्थडे पर उनके रूमर्ड बॉयफ्रेंड ने एक पोस्ट करके सनसनी मचा दी। वॉकर ब्लैंको ने जमाने के सामने अनन्या पांडे को आई लव यू बोल दिया था। इसके बाद अनन्या पांडे के फैंस के बीच हंगामा मच गया। इस बीच अनन्या पांडे ने एक बार फिर से फैंस का ध्यान अपनी तरफ खींचना शुरू कर दिया। अनन्या पांडे का एक वीडियो

सोशल मीडिया पर वायरल हो रहा है। इस वीडियो में अनन्या पांडे फुलझड़ी के पैकेट पर अपनी तस्वीर देखकर रिएक्ट करती नजर आई!

वीडियो में अनन्या पांडे की बहन ने उनको फुलझड़ी का पैकेट दिखाया जिसमें उनकी तस्वीर थी। ये तस्वीर देखते ही अनन्या पांडे चौंक गईं। अनन्या पांडे को तो यकीन ही नहीं हुआ कि उनकी तस्वीर फुलझड़ी के पैकेट पर छप सकती है। वीडियो में अनन्या पांडे कहती नजर आ रही हैं कि ऐसा कैसे हो सकता है। फुलझड़ी के पैकेट पर अपनी तस्वीर देखना मेरा सपना था, ये सपना पूरा हो गया। वीडियो में अनन्या पांडे की खुशी देखते ही बन रही है। वहीं वीडियो में अनन्या पांडे के परिवार के लोग भी उनकी तारीफ करते दिख रहे हैं।

लोगों को भी वीडियो में अनन्या का ये अंदाज पसंद आया। यही वजह है जो अनन्या पांडे की दिवाली का ये वीडियो अब वायरल हो रहा है। ऐसा पहली बार हुआ है जब किसी बॉलीवुड अदाकारा ने फुलझड़ी के पैकेट को देखकर ऐसा रिएक्शन दिया हो। ये पहली बार नहीं है जब अनन्या पांडे की तस्वीर फुलझड़ी के पैकेट पर छपी हो, हर साल अनन्या पांडे की तस्वीर फुलझड़ी के पैकेट्स पर दिखती है।

'परशुराम' बनकर धमाल मचाएंगे विक्की कौशल

विक्की कौशल के पास एक बाद एक बड़ी फिल्में लाइन में लग रही हैं, जिस वजह से विक्की के चाहने वाले खुश हैं। इन दिनों विक्की कौशल निर्देशक संजय लीला भंसाली की फिल्म 'लव एंड वॉर' की शूटिंग में बिजी हैं, जिसके लिए उन्होंने कड़ी मेहनत की। अब विक्की के हाथ एक और बिग बजट फिल्म लग गई। अभिनेता को एक मेगा बजट फीचर फिल्म ऑफर हुई है, जिसे एक्टर मना नहीं कर सके।

विक्की कौशल अपनी फिल्म 'लव एंड वॉर' के बाद एक बिग बजट माइथोलॉजिकल फिल्म करना चाहते थे और उनकी ये ख्वाहिश दिनेश विजान ने पूरी कर दी। एक रिपोर्ट सामने आई, जिसमें दावा किया गया कि विक्की कौशल ने दिनेश विजान के साथ हाथ मिलाया है। उन्होंने विक्की को एक धांसू माइथोलॉजिकल फिल्म की कहानी सुनाई, जिसे एक्टर करने से मना नहीं कर पाए। इसके बाद ही एक्टर की लिस्ट में एक और बिग बजट फीचर फिल्म का नाम जुड़ गया। दिनेश विजान की इस फिल्म में विक्की कौशल भगवान परशुराम का रोल निभाएंगे।

'रामायण' की रिलीज डेट घोषित, दोनों दिवाली बुक

रणबीर कपूर की फिल्म 'रामायण' का बेसब्री से इंतजार किया जा रहा है। मेकर्स ने इस फिल्म का अनाउंसमेंट कर दिया। इसके साथ ही रिलीज डेट भी बता दी। 'रामायण' के डायरेक्टर नितेश तिवारी ने अपने सोशल मीडिया हैंडल से फिल्म का फर्स्ट लुक पोस्टर शेयर करते हुए बताया है कि इसे दो पार्ट में रिलीज किया जाएगा। ये फिल्म साल 2026 और साल 2027 की दिवाली पर सिनेमाघरों में रिलीज की जाएगी। फिल्म 'रामायण' के रिलीज होने में अभी काफी समय है। लेकिन, इसके अनाउंसमेंट के बाद दर्शक एक्साइटेड हैं।

फिल्म के डायरेक्टर नितेश तिवारी के अलावा

प्रोड्यूसर नमित मल्होत्रा ने भी अपने सोशल मीडिया हैंडल पर पोस्टर शेयर किया। उन्होंने इसके साथ लिखा कि मैंने एक दशक से भी ज्यादा समय पहले इस महाकाव्य को बड़े पर्दे पर लाने की पहल की थी, जिसने 5000 साल से भी ज्यादा समय तक अरबों दिलों पर राज किया। आज मैं इसे खूबसूरती से आकार लेते हुए देखकर रोमांचित हूं। हमारा उद्देश्य है कि अपने इतिहास, सच्चाई और संस्कृति रामायण का सबसे प्रामाणिक रूपांतर को दुनिया भर के लोगों के सामने पेश करना। हमारे साथ जुड़ें क्योंकि हम अपने महानतम महाकाव्य को गर्व और श्रद्धा के साथ जीवंत करने के अपने सपने को पूरा कर रहे हैं।

नितेश तिवारी के डायरेक्शन में बनने वाली फिल्म 'रामायण' की स्टारकास्ट को लेकर अभी ऑफिशियल अनाउंसमेंट नहीं हुआ। हालांकि, ये जानकारी सामने आ चुकी है कि फिल्म 'रामायण' में रणबीर कपूर भगवान राम, साई पल्लवी माता सीता, यश रावण, अरुण गोविल राजा दशरथ, रवि दुबे लक्ष्मण, इंदिरा कृष्णन कौशल्या के रोल में नजर आएंगी। आए दिन फिल्म 'रामायण' के सेट से वीडियोज और फोटोज सोशल मीडिया पर लीक होते रहते हैं। जबकि, मेकर्स ने काफी कड़ी व्यवस्था की, ताकि शूटिंग को कोई कैमरे में कैप्चर न कर सके।

परदे पर नायिकाओं को नहलाने का राज कपूर अंदाज

अशोक जोशी

राज कपूर अपनी फिल्मों में नायिकाओं का सौंदर्य उभारने के लिए स्नान दृश्यों का भरपूर प्रयोग करते रहे। उनकी नायिकाओं में नर्गिस से लेकर पद्मिनी, वैजयंती माला, सिमी ग्रेवाल, डिम्पल

कपाड़िया, जीनत अमान और मंदाकिनी सभी को राज कपूर ने नदी से लेकर झरनों तक में खूब स्नान कराया। अपनी जीवनी में राज कपूर यह तथ्य स्वीकार करते हैं कि नायिकाओं को स्नान करने का विचार उनके बचपन की यादों का विस्तार है।

दो दिन पहले कार्तिक पूर्णिमा के साथ पवित्र कार्तिक माह का समापन हुआ। कार्तिक माह में अलसुबह का स्नान बहुत महत्वपूर्ण माना जाता है। वैसे देखा जाए तो स्नान हमारे जीवन का प्रमुख कार्यकलाप है। इसके बिना दिन की शुरुआत ही नहीं होती। कुछ परिवारों में आज भी यह नियम कायम है कि बिना स्नान महिला या पुरुष रसोईघर या पूजा घर में प्रवेश ही नहीं सकते। हमारे जीवन की तरह हमारी हिंदी फिल्मों में स्नान का विशेष महत्व रहा है। अधिकांश फिल्मों में दर्शकों को गुदगुदाने के लिए स्नान दृश्य जरूरी समझकर उनका उपयोग किया जाता है। इस पर भी यदि फिल्म राज कपूर की हो, तो उसमें नमक मिर्च की तरह स्नान दृश्यों का तड़का भी जरूरी होता था।

हिंदी फिल्मों के ग्रेट शो मैन कहे जाने वाले राज कपूर अपने आपको सौंदर्य का पुजारी मानते थे। वे अपनी फिल्मों में नायिकाओं के सौंदर्य को उभारने के लिए स्नान दृश्यों का भरपूर प्रयोग करते। उनकी नायिकाओं में नर्गिस से लेकर पद्मिनी, वैजयंती माला, सिमी ग्रेवाल, डिम्पल कपाड़िया, जीनत अमान और मंदाकिनी सभी को राज कपूर ने नदी से लेकर झरनों तक में खूब स्नान कराया। यह बहस का विषय हो सकता है कि राज कपूर महज नायिकाओं के सौंदर्य को अनावृत करने के लिए स्नान दृश्यों को फिल्माते थे या दर्शकों को गुदगुदाने के लिए या फिर यह कला का ही कोई अंग है।

राज कपूर की जीवनी में वह यह तथ्य स्वीकार करते हैं कि नायिकाओं को स्नान करने का विचार उनके बचपन की उन यादों का विस्तार मात्र है। जब वे अपनी मां के साथ स्नान किया करते थे। उन्होने यह बताया था कि वह अपनी मां को नहाते देखा करते थे, उन दिनों की उनके मन में गहरी छाप थी। उन्होंने स्वीकारोक्ति की थी, कि वे शीघ्रता से युवा हो रहे थे और न्यूडिटी के पुजारी थे। उन्हें लगता था कि मां के करीब होने के कारण उन पर काफी असर हुआ। वह यह भी बताते थे कि उनकी मां सुंदर और तीखे नैन नक्श वाली पठान महिला थी। बचपन में वह अक्सर अपनी मां के साथ ही नहाया करते थे, जिसका उनके बाल मन पर गहरा प्रभाव पड़ा, जिसे उन्होंने थोड़ा बदलकर 'मेरा नाम जोकर' में पेश

भी किया था।

राज कपूर ने अपनी शुरुआती फिल्मों से लेकर अपने निर्देशन में बनने वाली अंतिम फिल्म तक लगभग सभी फिल्मों में नायिका को नहाते हुए दिखाया। उनके श्याम-श्वेत से लेकर रंगीन सौंदर्य को कलात्मक तरीके से जिसे आलोचक समीक्षक इरोटिक मानते हैं, पर्दे पर पेश किया। अपनी नायिका को नहलाने का उनका यह सिलसिला उनके निर्देशन में बनी पहली फिल्म 'आह' से शुरू हुआ। इसमें ड्रम में नहाती हुई नर्गिस गाती है 'मेरा अंग अंग मुस्काया।' उसके बाद राज कपूर ने नर्गिस को 'आवारा' में एक बार फिर बिकनी पहनाकर प्राकृतिक स्विमिंग पूल के इर्द गिर्द दौड़ते हुए दिखाकर दर्शकों को भरमाया।

नर्गिस से अलगाव के बाद राज कपूर ने फिल्म 'जिस देश में गंगा बहती है' का निर्माण किया।

वैसे तो यह फिल्म डाकुओं के आत्मसमर्पण पर आधारित थी, जिसकी कहानी सुनने के बाद शंकर जयकिशन ने कह दिया था कि इसमें गानों की कोई संभावना नहीं है। इसलिए राज कपूर सलिल चौधरी जैसे किसी संगीतकार को ले। लेकिन, राज कपूर ने कहा कि दस दिन ठहर जाओ। उन्होंने फिल्म की जिस पटकथा में एक भी गाने की गुंजाइश नहीं थी, दस गानों की सिचुएशन बनाकर सभी को हैरान कर दिया था। इन्हीं में एक सिचुएशन स्नान दृश्य के दौरान फिल्माए गीत 'हो मैने प्यार किया, इन आंखों का रंग हो गया शराबी की भी थी। इसमें मांसल पद्मिनी को कभी पोखर में तो कभी झरने के नीचे नहाते दिखाया गया था। फिल्म की सफलता में इस गीत का भी बडा हाथ था। यह गीत देखते हुए दर्शक भी पद्मिनी के साथ कहीं न कहीं प्रेम रस में भीग गया था।

जब राज कपूर ने श्वेत श्याम फिल्मों से नाता तोड़कर रंगीन फिल्मों से नाता जोड़ते हुए वैजयंती माला को लेकर 'संगम' का निर्माण किया, तो इसमें वह कहां पीछे रहने वाले थे। लाल रंग की बिकनी पहने वैजयंती माला से उन्होंने पानी में तैरते हुए 'मेरे मन की गंगा और तेरे मन की जमुना का बोल राधा बोल बोल संगम होगा कि नहीं' फिल्माया तो दर्शकों ने सिनेमा हाल को चिल्लर से भर दिया। 'संगम' के बाद जब उन्होंने अपनी महत्वाकांक्षी फिल्म 'मेरा नाम जोकर' का निर्माण किया, तो उसमें भी स्नान दृश्य को जोड़ना नहीं भूले। पहले भाग में उन्होने लगभग नग्न सिमी को नहाते दिखाया फिर तीसरे भाग में पद्मिनी को पहले ड्रम में फिर एक डेढ फीट की साड़ी पहने बारिश में नहाते हुए 'अंग लग जा बालमा' गाते दिखाकर दर्शकों को गुदगुदाने का काम किया।

फिल्म की असफलता और अपने बुढ़ापे के चलते जब राज कपूर ने नायक बनने से तौबा कर अपने बेटे ऋषि कपूर को लेकर बॉबी का निर्माण किया तब भी स्नान दृश्य को फिल्माने का मोह न छोड पाए। उन्होने सोलह साल की डिम्पल को स्विमिंग सूट में दिखाकर दर्शकों का प्यार पाया। इसके बाद उन्होने जब ग्लैमर गर्ल जीनत अमान को लेकर अध्यात्म के नाम पर 'सत्यं शिवं सुंदरम' का निर्माण किया तो न तो सत्य याद रहा और न ही शिव बस याद रहा सिर्फ सुंदर और उन्होंने छोटी सी सफेद साडी पहना कर नहा कर आयी जीनत अमान के सौंदर्य को कैमरे में कैद कर दर्शकों को शिव के नाम पर उन्मुक्त सौंदर्य के दर्शन कराए।

'राम तेरी गंगा मैली' में एक बार फिर कैमरे के पीछे राजकपूर जवान हो गए और उन्होंने सफेद पहाड़ों की गोद में दूध की तरह बहते सफेद झरने के नीचे सफेद कपड़ा लपेटे मंदाकिनी को अनावृत कर बॉक्स ऑफिस पर सिक्के बरसाने में कामयाबी पायी। एक बार उन्होने स्टार कॉलमिस्ट देवयानी चौबल के सामने स्वीकार किया था कि उन्हें बचपन में अपनी मां के सौंदर्य से ही फिल्मों में सौंदर्य को परदे पर पेश करने की प्रेरणा मिली है। और बहुत हद तक अपने स्नान दृश्यों के कारण ही उन्हें ग्रेट शौमेन का दर्जा मिला । यदि उन्हें सेल्यूलाइड का बाथिंग गॉड कहा जाए तो अतिश्योक्ति नहीं होनी चाहिए।

जरूरी तो है... 'लेकिन दरवाजा...!'

प्रकाश पुरोहित

उनके कमरे के पास यानी ठीक बगल में एक कमरा है। हर घर में होता है। और भी कमरे होते हैं, ड्राइंग-रूम होते हैं, किचन होते हैं, और भी ना जाने क्या-क्या, लेकिन उनके कमरे के पास ही एक और कमरा है, जिसमें एक अदद दरवाजा है और उन्हें इसी दरवाजे से परेशानी है। पिछली बरसात में यह दरवाजा ज्यादा बारिश की सोहबत में आकर ना जाने क्यों फूल कर कुप्पा हो गया था। उन्हें लगा था बारिश का नशा उतर जाएगा तो दरवाजा भी मूल-स्वरूप में यानी असली औकात पर आ जाएगा!

दरवाजे भी आदमी की तरह होते हैं, यह पता नहीं था। एक बार फूला तो फिर पिचका नहीं। जब भी दरवाजा लगाने की कोशिश की जाती, चौखट तक आकर अड़ जाता कि 'अब और आगे नहीं जाऊंगा।' अगर किसी ने सत्ता दल के छुटभैये की तरह दादागीरी दिखाई तो फिर ऐसा बंद होता कि खोलने के लिए मजदूर बुलवाने पड़ते।

तभी एक रोज कमरा-स्वामी ने सुतार को बुलवा कर दरवाजे की सारी हेकड़ी निकाल दी और चौखट से आधा इंच दूर कर दिया, यह सोच कर कि सर्दी में नही, गरमी में फिर फैल जाएगा। काष्ठ-विज्ञान का कितना ही ज्ञाता हो, हकीकत में तो हम जब इंसान को ही ढंग से नहीं जान पाते हैं तो फिर लकड़ी के बारे में क्या तो दावे से बोल सकते हैं। किस तरह बिहेव करेगी, यह तो वापर कर भी नहीं जान सकते। एक बार दरवाजे पर रंदे की मार से जो चौखट छूटी तो जैसे बिटिया का मायका हो गई...।

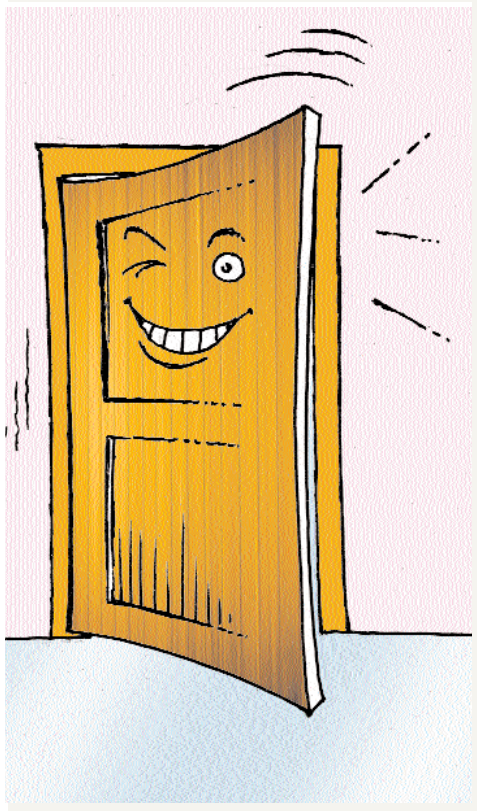

अब साल भर से ज्यादा हो गया है, कमरे के रहवासियों को तो दरवाजे और चौखट की छेटी से कुछ फर्क नहीं पड़ता, लेकिन पास के कमरे का निवासी होने के नाते वे हर समय इस धमक के साथ जी रहे थे कि दरवाजा अब भड़िका कि तब भड़िका। उस कमरे का यात्री जब भी बाहर निकलता तो दरवाजा इतनी जोर से भड़िकते कि उनका तो जैसे पूरा ब्रह्मांड ही डोल जाता। धड़का बना रहता, कान बाहर ही लगे रहते। सबसे बुरा तो तब होता कि जब गहरी नींद में दरवाजा अपनी सस्वर मौजूदगी दर्ज कराता। अब कमरा है तो किसी को कह नहीं सकते कि देर रात तो दरवाजे को दिन के अंदाज में पूरी ताकत से बंद मत करो, क्योंकि उन बेचारों को तो शायद यह पता भी नहीं होगा कि उनकी आम-सी रोजमर्रा की हरकत का किसी भले आदमी की जिंदगी से भी कुछ लेना-देना है।

जब दरवाजे के बंद होने की आवाज से उनकी नींद की दुश्मनी हो गई तो एक रोज, कमरा-मालिक से अपनी व्यथा-कथा कह दी। मालिक को नहीं पता था कि जिंदगी में किसी को इस तरह की भी शिकायत, किसी से हो सकती है। 'दरवाजा तो आप चाहे जैसे खोलो, लेकिन जब बंद करो तो इतने हौले से कि कानोंकान भी आवाज नहीं हो, क्या ऐसा किया जा सकता है?' उनका निवेदन-प्रश्न था! सोच-विचार के बाद जवाब आया 'यह काम मैं अपने स्तर पर तो पूरी निष्ठा से कर सकता हूं, लेकिन बाकी के बारे में दावे से नहीं कह सकता। आप तो जानते ही हैं, सभी हमारी तरह संवेदनशील तो हो नहीं सकते।' मुझे भी पहली बार पता चला कि मैं भी संवेदनशील हूं।

'आप भी कुछ सोचिए, और हम भी कुछ विचारते हैं, कोई रास्ता तो निकल ही आएगा। लोग तो एटीएम के दरवाजे खोल लेते हैं, ये कोई बड़ी बात नहीं है।' सांत्वना दी गई, लेकिन दरवाजे का 'भड़ाक' से बंद होना चालू रहा। किसी ने सुझाया... यदि चौखट के पास कपड़ा रख दिया जाए तो कितनी भी जोर से दरवाजा बंद किया जाए, आवाज नहीं आएगी। यह कहते हुए इस तरकीब का 'सार्वजनिक-प्रदर्शन' भी कर दिया गया। राहत की सांस सिर्फ कमरे ने नहीं, पूरे घर ने ली, जैसे कि हमारी सीमा से चीन हटने को राजी हो गया हो।

यह प्रयोग भी मोदी के नोटबंदी की तरह नाकाम रहा, क्योंकि हर एक को तो यह याद दिलाया नहीं जा सकता कि 'भय्या-बहनजी, आप बाहर जा रहे हैं तो दरवाजे की चौखट पर भी नजर मार लें कि कपड़ा ठीक से लगा है या नहीं। वैसे उस कपड़े के वहां स्थाई रहने की वजह से दूसरे उपयोग भी शुरू हो गए। जूते चमकाने हैं तो कपड़ा है ना, पानी या चाय ढुल गई है, कपड़ा ले आओ सामने से। टेबल साफ तो उसी कपड़े से की जाती है और बच्चे की नाक की सफाई भी कपड़े से बेहतर कौन कर सकता है भला! यानी कपड़े की इस बहुमुखी-प्रतिभा का पता किसी को नहीं था। और देखते ही देखते कपड़ा अपनी मूल नौकरी से हटाया जाकर अन्य सेवा में भी संलग्न किया जाने लगा, जैसे राजनीति में उपयोग खत्म होने पर राज्यपाल बना दिया जाता है... या अफसर को लूप-लाइन दिखा दी जाती है!

इस बारे में दरवाजा-विशेषज्ञों से भी बात की तो किसी ने कहा 'दरवाजा बदलना पड़ेगा', तो किसी का विचार था 'चौखट बदलने से भी काम हो जाएगा।' यह भी सुझाव आया कि कमरे को खुला ही रहने दिया जाए या फिर बंद ही नहीं किया जाए या यह सबसे आसान है कि आप ही कहीं और ऐसी जगह शिफ्ट हो जाएं कि दरवाजे का झंझट ही ना रहे।' विचार तो आ रहे थे, लेकिन सभी कांग्रेस को फिर से खड़ा करने जैसे थे कि सुनने में अच्छे मगर किसी मशरफ के नहीं!

कहते हैं ना कि बेरोजगारी, महंगाई, भ्रष्टाचार, बदहाली जैसी छोटी-छोटी बातों से जनता को ऊपर उठाने के लिए 'बंटेंगे तो कटेंगे' जैसा बड़ा और बेकार मुद्दा जरूरी हो जाता है, वैसे ही पासवाले मकान का रिनोवेशन कल से शुरू हो गया है, हथौड़े चल रहे हैं और अब उन्हें पास वाले कमरे के दरवाजे की 'भड़ाक' सुनाई नहीं दे रही है। बगैर कुछ किए एक समस्या तो हल हो गई, लेकिन दरवाजा तो बजता रहेगा!

क्या एक तीली ने ली है दस नवजात की जान?

गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कालेज की याद ताज़ा कर दी जब 2017 में ऑक्सीजन की कमी की वजह से 63 बच्चे काल कवलित हुए जिसमें बताया गया था कि ऑक्सीजन सप्लायर ने अपने किसी निजी विवाद के कारण यह सप्लाई रोक दी थी। तब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ही थे। उन्होंने तत्कालीन प्रभारी एक गैर हिन्दू चिकित्सक की हालत खस्ता कर दी थी। आज भी योगी ही मुख्यमंत्री हैं और ये हादसा हुआ है। क्या इसकी निष्पक्ष जांच होगी। पहले कहा जा रहा था कि ये हादसा शार्ट सर्किट की वजह से हुआ। जबकि झांसी के चीफ़ मेडिकल सुपरिंटेंडेंट सचिन महोर का कहना है कि ऑक्सीजन कंसंट्रेटर में सबसे पहले आग लगी। वे यह मानते हैं कि ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर में हुए स्पार्क की वजह से आग लगी और भीषण विस्फोट हुआ। देखते ही देखते हॉस्पिटल के अन्य कई वार्ड आग के आगोश में आ गए।

मुद्दा

सुसंस्कृति परिहार

लेखक स्तंभकार हैं।

उत्तर प्रदेश के झांसी स्थित लक्ष्मी बाई मेडीकल कालेज के एनआईसीयू वार्ड में देर रात हुए अग्निकांड में दस नवजात बच्चों की हृदयविदारक मौत ने एक बार फिर लोगों के दिल दिमाग को थर्रा दिया। इस कांड ने गोरखपुर के बीआरडी मेडिकल कालेज की याद ताज़ा कर दी जब 2017 में ऑक्सीजन की कमी की वजह से 63 बच्चे काल कवलित हुए जिसमें बताया गया था कि ऑक्सीजन सप्लायर ने अपने किसी निजी विवाद के कारण यह सप्लाई रोक दी थी। तब उत्तर प्रदेश के मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ ही थे। उन्होंने तत्कालीन प्रभारी एक गैर हिन्दू चिकित्सक की हालत खस्ता कर दी थी। आज भी योगी ही मुख्यमंत्री हैं और ये हादसा हुआ है। क्या इसकी निष्पक्ष जांच होगी।

पहले कहा जा रहा था कि ये हादसा शार्ट सर्किट की वजह से हुआ। जबकि झांसी के चीफ़ मेडिकल सुपरिंटेंडेंट सचिन महोर का कहना है कि ऑक्सीजन कंसंट्रेटर में सबसे पहले आग लगी। वे यह मानते हैं कि ऑक्सीजन कॉन्सेंट्रेटर में हुए स्पार्क की वजह से आग लगी और भीषण विस्फोट हुआ। देखते ही देखते हॉस्पिटल के अन्य कई वार्ड आग के आगोश में आ गए।

किंतु अग्निकांड के एक चश्मदीद भगवान दास के मुताबिक,बच्चों के वार्ड में एक ऑक्सीजन सिलेंडर के पाइप को लगाने के लिए नर्स ने माचिस की तीली जलाई। जैसे ही उसकी तीली जली पूरे वार्ड में आग लग गई। आग लगते ही भगवान दास ने अपने गले में पड़े कपड़े से 4 बच्चों को लपेटकर बचाया।

आग लगने से अस्पताल में अफरातफरी मच गई परिजन और मरीज जान बचाने के लिए भागने लगे, जिससे भगदड़ जैसी स्थिति बन गई।कहा जाता है दस बारह के लगभग बच्चों को लोगों ने खिड़की तोड़ कर निकाला। हालांकि फायर ब्रिगेड की टीम ने डेढ़ घंटे के अंदर मौके पर पहुंचकर शेष बच्चों को सुरक्षित बाहर निकाला। हादसे के समय NICU में कुल 54 बच्चे भर्ती थे।

एक और प्रत्यक्षदर्शी कृपाल सिंह ने बताया कि रात करीब 10 बजे डॉक्टर्स ने बच्चों को फीड कराने के लिए आवाज लगाई थी। इस पर जैसे ही वो एनआईसीयू की तरफ गए तो देखा एक नर्स जलती हुई कुर्सी हाथ में लेकर चीखती हुई बाहर आई। उसके कपड़ों में भी आग लगी थी जिसको देख वह बिना सोचे-समझे वार्ड के अंदर दाखिल हो गए और बच्चों को सुरक्षित बाहर निकालने की जुगत में जुट गए। लगता है, यह वही नर्स होगी जिसकी चर्चा भगवान दास ने भी किया है।

विचारणीय है कि इतने महत्वपूर्ण वार्ड में क्या एक ही नर्स थी? बाकी यदि होंगे भी तो बच्चों को छोड़ भाग खड़े हुए होंगे क्योंकि एक नर्स के सिवाय किसी कर्मचारी और डॉक्टर को लेशमात्र भी नुकसान नहीं हुआ। यह जांच के विषय में शामिल होना चाहिए। जिस ऑक्सीज़न कांस्टेटर में स्पार्किंग की बात मेडीकल सुपरिंटेंडेंट कर रहे हैं उस चिंगारी की जांच निष्पक्ष तरीके से होगी। बताया जाता है नर्स ने जहां माचिस की तीली जलाई और वार्ड में भभक पड़ी आग, वहां आग बुझाने वाला सिलेंडर 4 साल से एक्सपायर पड़ा था।

कृपाल सिंह ने घटना का आंखों देखा हाल बताया और कहा कि उनका नाती भी इसी वार्ड में भर्ती था। वह जब एनआईसीयू वार्ड में अंदर घुसे तो वहां का नजारा देखकर दिल दहल गया। इसके बाद उन्होंने करीब 13 बच्चों को तो एनआईसीयू गेट से बाहर सुरक्षित निकाला लेकिन, इसके बाद एनआईसीयू से बाहर निकलने के रास्तों को आग की लपटों ने घेर लिया। इस पर उन्होंने किसी तरह खिड़की को तोड़ा और 7 बच्चों को वहां से बाहर सुरक्षित हाथों में सौंपा। उधर फायरब्रिग्रेड 39 बच्चों को बाहर निकालने का दावा कर रहा है। उधर स्टाफ और पैरा मेडिकल चिकित्सकों को बच्चों को बचाने की बधाई प्रशासन दे रहा हैं।एसत्य तो सामने है ही रहा सहा जांच में सामने आएगा।

यह हादसा जिन वजहों से हुआ हो वह जांच से बाहर आए तो बेहतर है। उससे सबक ज़रूरी होगा। नन्हे-मुन्ने बच्चों का आना कितना सुखद होता है उनके परिवारों के लिए यह गहन सदमे का समय होगा। जिन बच्चों की मौत हुई है उनके माता-पिता को पांच लाख और घायल बच्चों के मां-बाप को पचास हजार देकर उनका ग़मगुसार नहीं होगा। ज़रुरत इस बात की है कि अबोले नवजातों के साथ ऐसा हादसा ना हो इसके प्रति संकल्पबद्ध हुआ जाए। जलते बच्चों की वेदना और नवजात को इस तरह छटपटाते देखने की उनके मां पिता की पीड़ा को आत्मसात कर ही ठोस निर्णय लिए जाएं।

सपने भरेंगे रफ्तार...

शासकीय कन्या माध्यमिक विद्यालय सुवासरा में साइकल वितरण समारोह हुआ। पूर्व शिक्षक होने के नाते मुझे भी आमंत्रित किया गया था। बहुत ही सुखद अनुभूति होती है ऐसे दृश्य देख कर। अपनी साइकल को देखती एक बिटिया में न जाने कितने स्वप्न तैरते देखता हूं।

फोटो और विवरण: बंसीलाल परमार

लघुकथा

जड़ें

अविनाश अग्निहोत्री

सुनो, पापा जी बता रहे थे कि पिछले कई दिनों से आप उनका फोन नही उठा रहे हो। चाय का कप हाथ में पकड़ाते हुए रचना ने अपने पति शोभित से कहा। हां नही उठा रहा हूं,व्यथित होकर शोभित बोला। पर ये तो ठीक नही,रचना ने उसे समझाते हुए कहा। थोड़े समय पहले उन्होंने कुछ पैसों की जरूरत बताई थी। जो मैं पूरी ना कर सका अब तुम ही बताओ रचना मैं उनसे कैसे बात करूं।इतना कहते उसकी नजरें झुक गई। अरे तो वो हमारे पिता है हमारी मजबूरी भी समझेंगे।लो एक बार उनसे बात करो।रचना उसके कंधे पर हाथ रख अब अपने ससुरजी को फोन लगाने लगी। इधर से शोभित के हैलो बोलते ही उसके पापा बोले,मेरा एक पुराना चेक बैंक से क्लियर हो गया है बेटा। हमें अब पैसे भेजने की कोई जरूरत नही और हां उसमे से कुछ पैसे मैंने तेरे अकाउंट में भी ट्रांसफर किए है। मुझे पता है तेरा काम काज भी अभी ठीक नही चल रहा है।बस यही बताने के लिए फोन कर रहा था। पर वो पैसे तो आप दोनों के बुढ़ापे में काम आ जाते पापा, मुझे क्यों भेजे। शोभित ने बड़ी हिम्मत से भर्राए स्वर में दूसरी ओर से कहा। तब वो मुस्कुराकर बोले हमें अपने बुढ़ापे की भला क्या चिंता उसके लिए तो तू है न बेटा। और हां जड़े अगर जमीन से सोखा हुआ पानी पौधे को देना बंद करदे दो पौधे को मुरझाते देर नही लगेगी। इतना कहते हुए उसके पापा ने फोन रख दिया और शोभित अपनी डबडबाई आंखे पत्नी के सामने पोछने की नाकाम कोशिश करने लगा।

मुंह बंद तो... सवाल उठ खड़े होंगे!

❐ यूके से प्रज्ञा मिश्रा

धर्मगुरुओं का इस्तीफा सुनने में ही अजीब लगता है, लेकिन अब हम उस दौर में हैं, जहां लाख छुपाएं, राज सामने आ जाते हैं। इंग्लैंड के आर्चबिशप का पद बड़ा है और वहां के महाराजा (और महारानी) के धार्मिक गुरु भी हैं। आर्चबिशप जस्टिन वेल्बी 2013 से पद पर हैं। शाही शादी से लेकर मौजूदा महाराजा चार्ल्स के राज्याभिषेक तक कई कार्यक्रम करवा चुके हैं। हाल ही में जस्टिन वेल्बी ने कहा कि इस्तीफा दे रहे हैं। वजह है खौफनाक केस, जिसकी जानकारी जस्टिन वेल्बी को थी, लेकिन लंबे समय तक जबान बंद रखी।

चर्च से जुड़े अपराधों की लिस्ट में बच्चों से ज्यादती का मामला सबसे आगे है। अनगिनत बच्चे हैं, जो संस्था की आड़ में यौन हमले सहते रहे। कई कहानियां हैं, जो सामने नहीं आई हैं, लेकिन जितना भी सामने है, वो काफी है। ऐसा ही दरिंदा बैरिस्टर जॉन स्मिथ भी था, जिसने 1970 से 1980 तक इंग्लैंड के डॉर्सेट इलाके में कई बच्चों का शोषण किया। यह शख्स जितने समय जिम्बाब्वे और साउथ अफ्रीका में रहा, वहां भी जुल्म कम नहीं हुए।

चर्च से जुड़े अपराधों की लिस्ट में बच्चों से ज्यादती का मामला सबसे आगे है। अनगिनत बच्चे हैं, जो संस्था की आड़ में यौन हमले सहते रहे। कई कहानियां हैं, जो सामने नहीं आई हैं, लेकिन जितना भी सामने है, वो काफी है। ऐसा ही दरिंदा बैरिस्टर जॉन स्मिथ भी था, जिसने 1970 से 1980 तक इंग्लैंड के डॉर्सेट इलाके में कई बच्चों का शोषण किया। यह शख्स जितने समय जिम्बाब्वे और साउथ अफ्रीका में रहा, वहां भी जुल्म कम नहीं हुए।

अपराध की पूरी जानकारी के बावजूद आर्चबिशप जस्टिन वेल्बी ने कुछ नहीं किया। पुलिस से बात भी नहीं की और अब जांच कमेटी की रिपोर्ट सामने आई है तो वाजिब है कि अगर समय रहते वेल्बी सामने आते तो मुमकिन है जॉन स्मिथ को सजा हो सकती थी। जॉन स्मिथ की 2018 में मौत हो गई।

इस्तीफे से चर्च के पुराने इतिहास और उससे जुड़े अपराधों पर कोई असर नहीं होगा, लेकिन इस्तीफे को शुरुआत मानना चाहिए। जस्टिन वेल्बी को इसे दबाना या नजरंदाज नहीं करना था। अगर जिम्मेदार मुंह बंद रखेंगे तो चर्च और उससे जुड़े सभी संस्थानों पर सवाल उठेंगे। अच्छा है कि समय रहते वेल्बी ने इस्तीफा दे दिया, क्योंकि जिन्होंने जॉन स्मिथ के जुल्म को झेला है, उनके लिए धार्मिक गुरुओं की चुप्पी बर्दाश्त बाहर है।